प्रकाशन जारी करने का दिनांक माह का 29-30 दिनांक

विराग विद्यापीठ भिण्ड, का मासिक मुख पत्र

मूल्य: ₹ १०

विराग वाणी

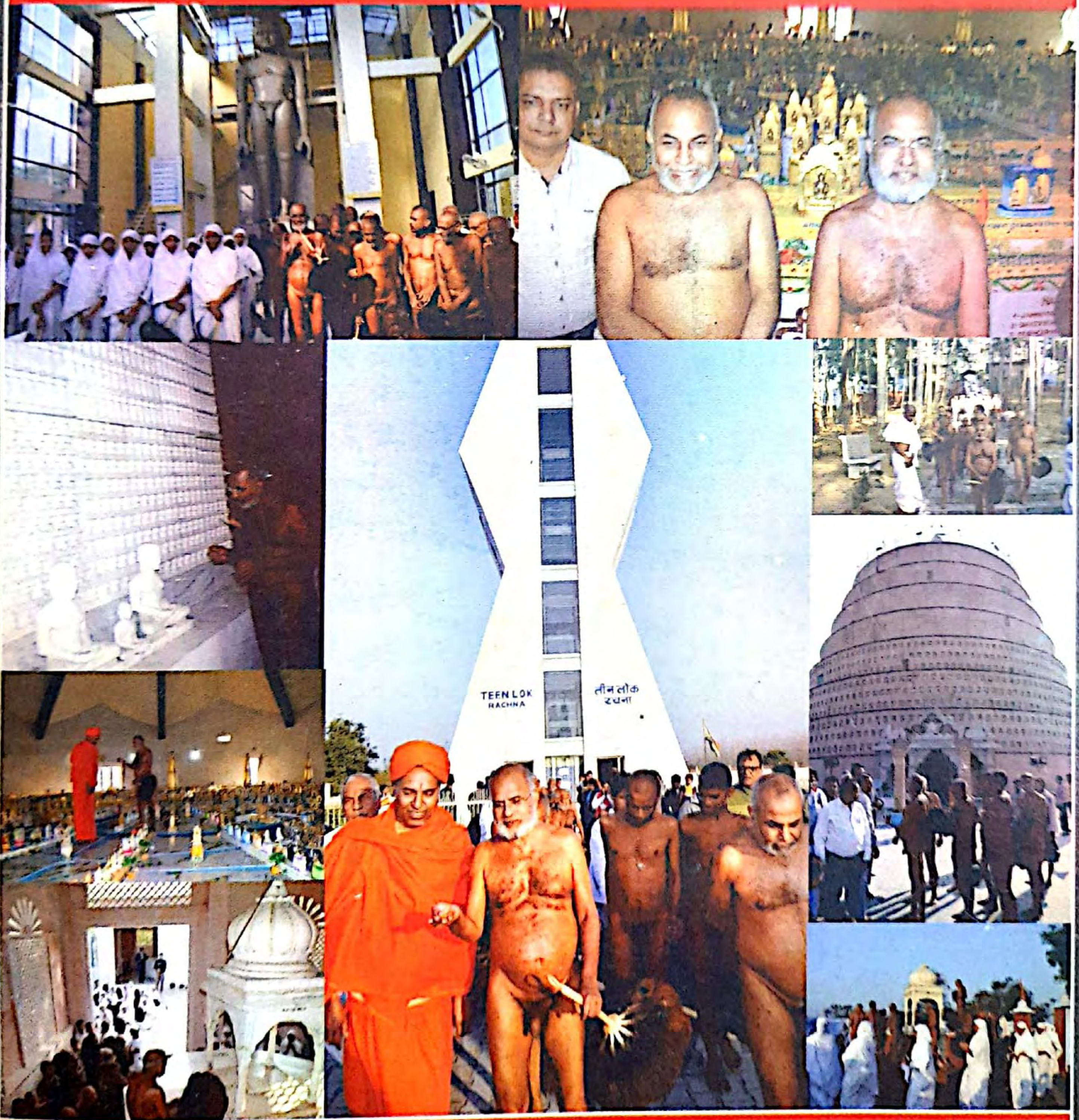

हस्तिनापुर : 1. बडा मंदिर 2. ढाई द्वीप 3. ज्ञानस्थली 4. जम्बू दीप 5. नसिया जी 6. जम्बू द्वीप की तीन लोक की रचना मे पीठाधीश श्री रवीन्द्र कीर्ति के साथ 7. अष्टापद के दर्शन 8.9. नसिया जी चरण छतरी हस्तिनापुर

वर्ष- 12 (17) अंक- 10 (179) पौष-माघ जनवरी 2018 वीर नि. सं. 2543

Scanned with CamScanner

1–2–3. बड़ागांव में मंदिरों की वंदना करते हुए गणाचार्य श्री 4–5. जम्बूदीप हस्तिनापुर एवं नसिया जी की ओर जाती हुई आर्यिकाएं 6. बड़ौत में नगर प्रवेश 7. उत्तराखण्ड के केबिनेट मंत्री श्री मदन जी कौशिक, बड़ौत के विधायक श्री पी. मलिक गणाचार्य श्री की आरती करते हुए 8. बड़ौत विहर्ष सभागर धर्म सभा

Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2015 - 17

वीर निर्वाण संवत २५४३
माह- जनवरी २०१८
अङ्क -१० (१७९)
वर्ष -१२ (१७)

विरागवाणी

मासिक

प.पू. गणा. श्री विरागसागर जी महाराज का राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण वर्ष २०१७-१८

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक	: ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन	: मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक	: इंजी.आनन्दकुमार ज़ैन, 9425620668 175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक	: श्री देवकुमार जैन गुड़ा ४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल मो. 09425608438
परामर्श मण्डल	: डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर : श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा) : श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा : प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़ : श्री मुकेश जैन, पथरिया : श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रवंध सम्पादक	: श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय	: जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879 Email-viragvani.jain@yahoo.com (वैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी' के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन वैंक	: A/c No. 065300201000101 IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व	: श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.org

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। यह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

पल्लव

❖ सम्पादकीय :
- संगत गुरु की : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणी आर्यि. विचक्षणाश्री माता ५

❖ प्रवचन एवं लेख
- सम्यग्दर्शन में हेतु है देशना लब्धि : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज ६
- उअच्छी बाते ग्रहण.. : आर्यि. विसुव्रतश्री माताजी ९
- आज्ञा विचय धर्म ध्यान : प.पू.श्री विरागसागरजी १०
- श्रद्धा दीप जलाओ : आ.श्रीविशुद्धसागर १४
- अभीक्षण ज्ञानोपयोगी...: आर्यिका विसंयोजनाश्री १५
- निस्पृहता : श्रमणी आर्यिका विदूषीश्री माताजी १६
- रात्रि भोजन त्याग से सुख-शांति : आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी १६
- ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज १७
- महावीर का निर्वाण, जीवन निर्वाह नहीं जीवन निर्माण का प्रतिफल : श्रमणा. विमर्शसागर जी १८
- आत्मचिन्तन : आर्यि. विसोहीश्री माता जी १९
- आत्मा की शरण में ही... : आ. विनम्रसागर जी २०
- विनयांजलि २१
- शंका-समाधान : प.पू. श्री विरागसागर जी २४
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ३१

❖ कविताएँ
- गुरुवर मेरे विराग..: श्री कांतिकुमार जैन 'करुण' १९
- योद्धा कौन ? : आ.श्री विशुद्धसागर जी २२
- इष्ट प्रार्थना : आचार्य विभवसागर जी २३

❖ स्वास्थ्य जगत :
- चर्बी कम कर... : आर्यि.विवक्षाश्री माताजी २६

❖ समाचार ३५

❖ विराग वर्ग पहेली ३८

Scanned with CamScanner

संगत गुरु की

इंजी. आनन्द कुमार जैन

मनुष्य की मति अपने से हीन व्यक्तियों के संसर्ग से हीन हो जाती है, समान लोगों के संसर्ग में रहने पर समानता रहती है, पर अपने से विशिष्ट गुणवान व्यक्ति के संसर्ग में रहने से गुणवत्ता बढ़ती है, हमारे जीवन में विशिष्टता आती है। अपने जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये हमेशा विशिष्टतर व्यक्ति से जुड़ने का प्रयास करना चाहिये। नदी में बहने वाला पानी शुद्ध माना जाता है और नाली में बहने वाला पानी बहुत अपवित्र रहता है। लेकिन नाली में बहने वाला पानी भी जब गंगा में मिल जाता है तो गंगा जल बन जाता है। यह संगति का असर है। नीतिकारों ने लिखा है कि एक चींटी जब फूल से जुड़ जाती है तो देवता के चरणों में फूल के साथ वह भी समर्पित हो जाती है। उस चींटी को देवता के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिल जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति यदि भले जनों की संगति में रहता है, तो अपने जीवन का विकास कर लेता है। भूमि जितनी उत्तम होती है उसमें बोया गया बीज उतना ही उत्तम बनता है। इसी प्रकार मनुष्य जितने उत्तम लोगों की संगत में होता है उसका उतना ही विकास होता है। वह अपने जीवन को उतनी ही अधिक गति दे सकता है। थोड़ा सान्निध्य पा लेने के बाद व्यक्ति का जीवन कितना महान हो जाता है। हम सड़क पर चलते हैं, पत्थर हमारे पैरों से ठोकर खाते रहते हैं। जिन पत्थरों को हम सड़क चलते रोज ठोकर मारते हैं वही पत्थर जब किसी शिल्पी के हाथ में आ जाता है तो उसे भगवान का आकार मिल जाता है और उसी पत्थर को कोई दूसरा आदमी उठाये तो लुढ़िया बना कर चटनी बनाने के काम आता है। किसी राजमिस्त्री के हाथ में आ जाये तो उस पत्थर को दीवाल में चुन दे। पत्थर एक है पर अलग-अलग लोगों के संसर्ग में आने के कारण उसका रूप अलग अलग हो गया है।

परम पूज्य गणाचार्य १०८ श्री विराग सागर जी महाराज ने बताया कि गुरु भक्ति तभी आरंभ हो सकती है जबकि गुरु के प्रति श्रद्धा हो और उनकी आज्ञा में रहने की कटिबद्धता हो। तभी सच्चे मायने में गुरु भक्ति कही जा सकती है। जो शिष्य गुरु के अनुशासन में ढल गया। वह जिनेन्द्र देव के अनुशासन में ढल गया और उसके अन्दर में आत्मानुशासन आ गया ऐसा कहा जाता है। आज्ञा विचय धर्म ध्यान इसी का नाम है कि में कभी भी आज्ञा के विरूद्ध नहीं चलूँगा। हे भगवन् मुझे इतनी शक्ति देना कि में कभी भी आपकी और गुरु की आज्ञा के प्रतिकूल न रहूँ। सदैव-सदैव जीवन के अन्तिम क्षणों तक हे प्रभू में आपके और गुरु के बताये हुये पद चिन्हों पर चलता रहूँ। और अपने जीवन को सफल बनाऊँ। विनय है अगर कदाचित मुझसे भूल हो जाये, कहीं धोखा हो जाये कहीं स्तुति न रहे तो मुझे क्षमा करना और हम उसके विषय में दण्ड लेगे प्रायश्चित लेंगे। ऐसे भाव जब सच्चे साधक के होते हैं तो इन भावनाओं और चर्या से ही वह धर्म ध्यान का फल प्राप्त कर लेता है। पहले आज्ञा विचय धर्म ध्यान को हम सदैव सदैव ध्यान रखेंगे। इसकी कीमत करेंगे और निरन्तर गुरु के आशीष और आदेश के अनुसार जीवन अच्छे संस्कार में ढालेगे। ऐसे पुनः पुनः हम भावना भाते हैं। दृढ़ता से हम संकल्प लेते हैं कि हम सदैव गुरु आज्ञानुसार रहें उनके स्वप्न में भी प्रतिकूल न रहें। सच्चे शिष्य गुरु आज्ञा को पाकर आनन्दित होते हैं और ऐसा अवसर मुझे सेवा करने को मिला ये मेरा सौभाग्य है यानि गुरु आज्ञा के लिये सौभाग्य पूर्ण मानते हैं।

Scanned with CamScanner

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार १०.१.१९८२)

।। ॐ ह्रीं णमो जिणाणं ।।

हे आत्मन्! संसारी संसारार्णव में जन्म मरण के अनन्त चौरासी लाख योनियों में महान् दुखों का वहन किया है। इन दुखों का नाश क्षय वीतराग सर्वज्ञ हितोपदेश जिनेन्द्र अरहंत केवली या चतुर्विंशति तीर्थंकरों की भक्ति स्तुति जप प्रमाण पूजन अर्चन ध्यान मनन चिंतन करने से और चार प्रकार अहारदान, औषधिदान, अभयदान, शास्त्रदान देकर अपने द्रव्य का दान देकर अपने जीवन की सार्थकपना प्राप्त करो। दान के देने से लोभ कषाय का क्षय होता है। और परिणामों में महाशांति मिलती है और ग्रहस्थपने से छूटने का उपाय है और जो ग्रहस्थ पूजा दान पंचकल्याणक आदि अपने चार में कभी नहीं करता। उसको जलांजलि देना ही श्रेयोमार्ग है। ऐसे सूम मानव का जन्म लेना पृथ्वी पर भार स्वरूप है।

अत: हे विमलात्मन् तुम भी पंच परमेष्ठी की भक्ति करते हुये अपने जीवन को सफल करना, यही श्रेयोमार्ग है। भक्ति में जामन मरण का क्षय होता है और उनके गुणों का बार-बार चिंतन करने से परम वैराग्य की सिद्धि होती है और यथा क्रम से संसारार्णव में सुख शांति से अपने काम करते हुये अठारह दोषों से हित जीवमुक्त होकर सिद्ध अवस्था प्राप्त हो जाती है।

जिनोपदेश

संकलन- श्रमणी आर्यिका विचक्षणाश्री माताजी

तिरश्चां मानुषाणां च प्रायो भेदोऽयमेव हि।

कृत्याकृत्यं न जानन्ति यदेकेडन्यत्रु तद्विद:।। १६३।। पद्मपुराण भा.१ सर्ग-८

तिर्थंच और मनुष्यों में प्राय: यही तो भेद है कि तिर्यंच कृत्य और अकृत्य को नहीं जानते हैं पर मनुष्य जानते हैं।

कृत्वा प्राणिवधं जन्तुर्मनोज्ञ विषयाशया।

प्रयाति नरकं भीमं, सुमहा दु:ख संकुलम्।। २२४।। प.पु. भा-१, स. ८

यह प्राणी मनोहर विषयों की आशा से प्राणियों का वध कर बहुत भारी दु:खों से युक्त भयंकर नरक में जाता है।

निमित्त मात्र तान्येषा मसुखस्य सुखस्य वा।

बुधास्तेभ्यो न कुप्यान्ति संसार स्थिति वेदिन:।। २४८।। प.पु. भा-१ स.८

दु:ख अथवा सुख के दूसरे लोग निमित्त मात्र है इसलिए संसार की स्थिति जानने वाले विद्वान उससे कुपित नहीं होते है अर्थात् निमित्त के प्रति हर्ष-विषाद नहीं करते हैं।

विविध रत्न समागम संपद: प्रबल शत्रु समूल विमर्दनम्।

सकल विष्टपगामि यश: सितं, भवति निर्मित निर्मल कर्मणाम्।।५३०।।

जो निर्मल कार्य करते है उन्हें नाना प्रकार के रत्नादि संपदाओं की प्राप्ति होती है, उनके प्रबल शत्रुओं का समूह नष्ट होता है और समस्त संसार में फैलने वाला उज्जवल यश उन्हें प्राप्त होता है।

प्राप्यतान् कदलीस्तम्भ निस्सारान् मोहवाहिता:।

पतन्ति नरके जीवा महादु:ख महाकुले।।८०।।प.पु.भाग-१, सर्ग-९

मोही जीव केले के स्तम्भ के समान नि:सार भोगों को प्राप्त कर महा दु:ख से भरे नरक में पड़ते है।

Scanned with CamScanner

सम्यग्दर्शन में हेतु है देशना लब्धि

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

बंधुओ! प्राणी जगत् के कल्याण के लिए तीर्थंकरों ने रत्नत्रय का मार्ग दिखाया है, मोक्षमार्ग दिखाया है। उसमें दो दिन से हम सम्यग्दर्शन के विषय में देख रहे हैं।

अध्यात्म जगत के राजहंस कुन्दकुन्द देव सम्यग्दर्शन की बात करते है तो सबसे पहले 'रूचि' शब्द देते है। अप्परूई सम्मत्तं अर्थात् आत्मा के प्रति रूचि का नाम सम्यग्दर्शन है। जयसेन आचार्य उसकी व्याख्या करते हुए कहते है धम्मरूचि सम्मत्तं धर्मरूचि सम्यकत्व है। आ.श्री वीरसागर जी को, जो शांतिसागर जी के शिष्य थे, उनसे किसी भक्त ने पूछा था- हम कैसे समझे, कि हम सम्यग्दृष्टि है? कैसे जाने कि हमारे अंदर सम्यग्दर्शन है? महाराज ने कहा- सम्यग्दर्शन ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हाथ में लेकर दिखाया जा सके या जिसे भगवान की मूर्ति के अंदर दिख सके, जो कि तिजोरी में दिखायी जा सके, जिसे किसी दुरवीन द्वारा देखा जा सके, किसी ड्रेस में या किसी वेष में देखा जा सके, सम्यग्दर्शन ऐसी वस्तु नहीं है। जिसे किसी देव या नारकी में देखा जा सके, या किसी भी तिर्यंच या मनुष्य में ही देखा जा सकें, क्योंकि यह नेत्रेन्द्रिय का विषय भी नहीं है। नेत्रेन्द्रिय से केवल रूपी पदार्थ ही देखा जा सकता है, अरूपी नहीं। रूपी का अर्थ है केवल पुद्गल। आंखों से केवल पुद्गल ही देखा जा सकता है इसके अलावा कुछ नहीं। सम्यग्दर्शन आत्मा का अमूल्य गुण है। आत्मा अरूपी है तो उसका गुण भी अरूपी रहेगा। जो अरूपी है, उसका रूप देखने का प्रयास व्यर्थ का श्रम है। जिनका रूप नहीं, उसका रूप देखना, अग्नि में शीतलता, आकाश में फूल, गधे में सींग, बंध्या का पुत्र देखना है। ये सारी बाते जिस प्रकार असंभव है उसी प्रकार सम्यग्दर्शन रूपी नहीं हो सकता। आ. श्री कुन्दकुन्द देव कहते हैं- सम्यग्दर्शन देखने का नहीं, अनुभव का विषय है। इसलिए आत्मानुभूति की बात आ. कुन्दकुन्द भगवन्, आ. अमृतचन्द्र समयसार में कहते है। आत्मानुभूति, आत्मरूपी, आत्मप्रतीति एकार्थवाची है। क्योंकि एक साथ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र निश्चय से अखण्ड अभेद है- व्यवहार में भेद विवक्षा होती है निश्चय में अभेद। अभेद का अर्थ यह नहीं कि तीनों मिलकर एक हो गए हो, सम्यक्दर्शन-सम्यक्दर्शन है। सम्यक्ज्ञान-सम्यक्ज्ञान है। सम्यक्चारित्र- सम्यक्चारित्र है। तीनों स्वतंत्र-स्वतंत्र सत्ता को लिए हुए है।

आ. नेमीचन्द्र महाराज के समक्ष बात आई- रूचि तो हर व्यक्ति में नजर आती है, ऐसी क्या कसौटी है जिस पर हर व्यक्ति कसकर देख ले। हर व्यक्ति अपने आप को सम्यग्दृष्टि कहता है। अन्य संप्रदायों में भी सम्यग्दर्शन शब्द आया है। वैदिक परम्परा में उपनिषद् में, बौद्ध संप्रदाय में 'सम्यग्दर्शन' आया है, उनके यहाँ की रूचि श्रद्धान, आस्था, विश्वास शब्द आते है लेकिन वे सही, रूचि, आस्था विश्वास की बात नहीं करपाते। हर व्यक्ति धर्म में रूचि रखता है लेकिन क्या वह सम्यक्दर्शन कहलाएगा? नहीं! अत: शर्त रखी- पंच लब्धि होना चाहिए- क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना प्रायोग्य, करण लब्धि।

आज हम आपको करणानुयोग की इस बात की ओर ले चलना चाहते है- देशना लब्धि- बहुत अच्छी बात है आपके यहाँ लोगों की प्रवचन सुनने में रूचि रहती है, बंबई में कार्ड दिए जाते थे। आज कहीं नाश्ता-पानी रखा जाता, कहीं एनाउसमेंट करवाया जाता, तब व्यक्ति उपस्थित होते हैं। मुझे ललितपुर बहुत अच्छा लगा, लगा कि यहाँ सम्यक्दृष्टि हैं। विना निमंत्रण, एनाउन्समेंट के आ जाते है। मतलब बिना श्रद्धा के नहीं आ सकते। सम्यक्दृष्टि वास्तविक, निश्चय से कितने है ये तो वो समझें। पर वास्तविक भी आ जाएगा तो आज भले सम्यक्दृष्टि न हो कल नियम से सम्यक्दृष्टि हो जाएगा देशना लब्धि के कारण। बहुत सारे लोग बोल रहे थे- ऐसे सुनने से क्या फायदा-एक कान से सुना, एक से निकाल दिया।

बन्धुओ! ललितपुर में जब हमने चातुर्मास किया था तो शुद्धि बुलबाते, त्याग पूछते, जनेऊ पूछते थे, समस्या दूसरी हो गई, लोग आहार के समय जनेऊ रखते और बाद में निकाल देते थे। एक सज्जन वोले ऐसे पहनने से क्या फायदा है? क्यों पहनाते हो? मैंने कहा- हमारी प्राचीन परम्परा है। यह लुप्त न हो जाए इसलिए पहनाता हूँ। सिक्खों ने कड़ा, जूड़ा कंघी बंद

Scanned with CamScanner

नहीं किया, ईसाईयों ने क्रास का निशान बंद नहीं किया, मुसलमानों मे दाढ़ी, गोल टोपी बगैरह बंद नहीं की, महाराष्ट्र में लिंगापत मत है, उनके यहां भी दीक्षा की परम्परा है। जिसमें ताबीज पहना दी जाती है और दूसरी जगह गए तो कंठी दी जाती है, इसे वे धर्म दीक्षा मानते है। मैंने कहा सबने अपने अपने सिद्धांत बनाए रखे है। कोई पूछ ले कि जैनियों की क्या पहचान है ? तो उत्तर नहीं दे पायेंगे। जैन का अर्थ है- सम्यग्दृष्टि श्रावक। कामरेड जी बोल रहे थे- हम जन्मत: श्रावक हैं। मैंने कहा- गलत! व्रत की संज्ञा है, जैन धर्म की। जैन जाति नहीं धर्म है, श्रावक उपाधि नहीं, व्रत है। अन्य ग्रन्थों में व्रती का नाम श्रावक कहा गया है। जिसे अष्ट मूलगुणों के संस्कार के साथ यज्ञोपवीत द्रव्य चिन्ह दिया जाता है उसका नाम 'जैन' कहा है।

आदिपुराण में उल्लेख है- बालक तीर्थंकर आदिनाथ का जन्म हुआ तो सौधर्म इन्द्र ने उनके गले में यज्ञोपवीत डाल दिए। प्रश्न हुआ- ८ वर्ष से कम उम्र में यज्ञोपवीत संस्कार नहीं हो सकते ? सौधर्म इन्द्र बोले- संस्कार रूप में नहीं, धर्म प्रतीक के रूप में पहनाया है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र का प्रतीक तीन धागे हुआ करते है। यज्ञोपवीत के संस्कार पिता के हाथों किए जाते थे। आदिनाथ ने भरत को ८ वर्ष की उम्र में उपनीति क्रिया के अनुसार यज्ञोपवीत पहनाया था। लोग कहते है यज्ञोपवीत ब्राह्मणों की पद्धति है। मैं भी ऐसा ही सोचता था। पर जब तक अपने शास्त्र नहीं पढ़े तब तक तो लगता है कि ब्राह्मण परम्परा है पर आदिपुराण में उल्लेख है- सौधर्म इन्द्र ने विदेह क्षेत्र में शाश्वत परम्परा के अनुसार ५३ क्रियाओं में उपनीति का स्मरण किया था। श्री आदिनाथ ने भी भरत चक्रवर्ती के संस्कार लिए थे। भरत चक्रवर्ती ने ब्राह्मण वर्ण की स्थापना तब की थी जब उन्हें तीन लाभ (१) आदिनाथ भगवान को केवलज्ञान (२) पुत्रोत्पत्ति (३)आयुधशाला में चक्ररत्न की उत्पत्ति एक साथ तीनों प्राप्त हुए थे। तब उन्होंने पहले आदिनाथ भगवान की पूजा की। बाद में पुत्रोत्सव मनाया, तीसरे- चक्ररत्न को ऐसे ही स्वीकार नहीं किया जा सकता, दिव्य रत्न है जिसका नियम है पहले दिग्विजय यात्रा करके लौटें।

६०,००० वर्ष तक दिग्विजय के बाद भरत चक्रवर्ती वह दिव्य रत्न प्राप्त कर लेते है एक दिन वे सोचते है कि आदिनाथ भगवान कहते हैं- गृहस्थ जीवन में आरम्भ, सारम्भ, पाप की श्रृंखला अनवरत बनी रहती है, उसे धोने के लिये दान देना चाहिए। सोचते हैं सत्पात्रों को कितना दान दिया जा सकता है। मुनि महाराज आहार के सिवाय कुछ नहीं लेते। आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, त्यागी ज्यादा से ज्यादा वस्त्र लेते है इतना दान तो चक्रवर्ती के लिए ऊँट के मुख में जीरा है। ध्यान रखना अपने अपने हिसाब का दान होना चाहिए। चक्रवर्ती दान हेतु पात्रता, परीक्षा के व्रती मनुष्यों को आमंत्रित करते हैं और उनके मार्ग में पूर्व से ही अंकुर उगवा देते हैं जिसे देखकर व्रती बाहर ही ठहर जाते हैं। चक्रवर्ती कारण पूंछते हैं तो पता चलता हैं- घास पर पैर रखने में हिंसा मानी गई है इसलिए वे प्रवेश नहीं कर सके। चक्रवर्ती ने अन्य मनुष्यों को बाहर भेजकर दूसरे रास्ते से व्रतियों को बुलाकर यज्ञोपवीत से सम्मानित किया। तब शॉल, श्री फल की नहीं यज्ञोपवीत की परम्परा थी। भगवान आदिनाथ ने १००० वर्ष तप किया, ८४ लाख पूर्व की आयु थी। ६०,००० वर्ष भरत चक्रवर्ती को दिगविजय में लगे। उसके कितने समय बाद भरत चक्रवर्ती ने ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की। इसलिए यह भ्रम मन से निकाल देना कि यह ब्राह्मण परम्परा है। ये बात अलग है उन्होंने राज सम्मान मानकर इसका बहुत सम्मान रखा। सेठ सवाई सेठ, चौधरी आदि उपाधि है। जो एक रथ चलवाता है वह सिंघई, उनके बाद बच्चे भी सिंघई लिखते हैं। अपने यहाँ यज्ञोपवीत की शिथिलता आती गई कि मात्र पंचकल्याणक, विधान, जाप के समय पहने लेते हैं। मैंने कहा- जिनशासन के इस सूत्र की रक्षा करना चाहिए। लोग कहते हैं- बहुत लम्बे नियम है। मैंने कहा- नहीं, शास्त्रों में हमने देखा। मात्र अष्ट मूलगुण- पांच प्रदम्बर त्याग, मधु का त्याग, रात्रि भोजन त्याग, नित्य देव दर्शन, पानी छानकर पीना, जीवदया पालन और ३ मकार त्याग अथवा ५ उदम्बर त्याग, मद्य, मांस चौके में तो नहीं पूछ सकते कि- शराब पीते हो ? मांस खाते हो ? क्योंकि ऐसे भी स्थान पर हम गए। मैंने कहा- प्रवेश पत्र होना चाहिए।

एक स्थान पर एक सज्जन आहार देने आये। हमने पूछा-कि जनेऊ ? बोले- जनेऊ क्यों ? मैंने आहार के बाद बताया सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र का प्रतीक है। एक और उल्लेख मिला- यदि गृहस्थ की मृत्यु हो जाए, यज्ञोपवीत धारी

Scanned with CamScanner

हो तो यज्ञोपवीत जलाया नहीं जाता, ऊँचे स्थान पर टांग देते है जैसे समाधि के बाद मुनिराज की पिच्छी जलायी नहीं जाती। कारण क्या है ? वह जीव यदि उस स्थान पर पहुंचे तो पिच्छी या जनेऊ देखकर स्मरण आ जाएगा कि मैं तो धर्मात्मा था उसे सम्यग्दर्शन हो सकता है। सातवे नरक के नारकी जीव को भी स्मरण हो जाता है। मैंने प्रवचन सुना था काश! भगवान, जिनवाणी या गुरु के उन बचनों को मान लेते तो ऐसे स्थान पर नहीं आना पड़ता। उन्होंने कहा था- पाप का इंजेक्शन दे देते है पर वेदना तो वेदना ही है।

'जाके पैर फटे न विवाई, वो क्या जाने पीर पराई ।।'

प्रश्न है- ऐसे कर्म क्यों बांधे ? मिथ्यात्व के उदय में ? तो कहते है-

'मिथ्यादृष्टि जीव को, धर्म कथा न सुहाये।
कै ऊंधै कै लड़ मरै, कै उठ घर को जाए।।'

मुझे लगता है-आप सब सम्यक्दर्शन हो, धर्म चर्चा सुहाती तो है कम से कम। मिथ्यादृष्टि को धर्म कथा नहीं रूचती इसलिए अनाब-शनाब कर्म बांधता जाता है हंसते-हंसते कर्म बांधते है और रोते-रोते भोगते है।

एक रानी थी लक्ष्मीबाई। राजा उसके यहाँ बहुत दिन बाद आये। आमोद-प्रमोद में तत्पर हुए। इसी बीच मुनिराज आ गए। राजा, रानी को छोड़ मुनिराज को पड़गाने चले गए, रानी भी पीछे-पीछे गई पर मन में सोच रही थी- ये कहाँ से आ गए ? राजा को अचानक राजसी काम आ गया। उन्होंने मुनिराज को सेवा में रानी को नियुक्त करते हुए कहा- तुम महाराज की नवधा भक्ति करना, मैं आ रहा हूँ। रानी तो रानी, बड़ी अभिमानी थी। मुनिराज भोजन के नहीं भक्ति के भूखे होते हैं। नवधा भक्ति से आहार मिले तो लेते है, अन्यथा नहीं। रानी ने एक भी भक्ति नहीं की। अत:

अंजुली छोड़कर वे जंगल की ओर चले गए।
यहाँ देखते ही देखते रानी के कोढ़ हो गए।
गुरु से कपट, मित्र से चोरी।
या हो दरिद्री, या हो कोढी।।

दरवाजे पर ही आपके यहाँ इतनी ऊँची बात लिखी है कि प्रवेश करने वाला सोच समझकर प्रवेश करेगा। आहार आदि सेवा कर पाओ या नहीं, संतों का अनादर नहीं करना। जो अनादर करता है वह संतान विहीन होता है। जब हम कर्नाटक में विहार कर रहे थे तब एक राजा की बात आई कि वे नि:संतान थे उनके परिजन परम्परागत अन्य राजा भी नि:संतान थे। किसी ने गोद लिए, किसी की संतान हुई तो सही नहीं हुई।

लक्ष्मीवती को कुष्ठ रोग हो गया। राजा वापस आया तो पहचान नहीं पाया, जगह-जगह से खूब मवाद बह रहा था मानो दही फट गया हो। या ट्रक के काँच फूट गये हैं। रानी नेकहा भूल गए क्या महाराज ? राजा बोले- मैंने आपको पहले नहीं देखा कौन हो ? रानी बोली- आपकी महारानी 'लक्ष्मीवती' राजा बोला- रानी तुम्हारी ये हालत कैसे हो गई ? पहले वताइए महाराज- करोगे तो दुर्गति में जाना पड़ेगा। उस समय लगता था- शास्त्रों की बातें है विश्वास नहीं जागा था। नरक में पहुँचते ही ५०० धनुष उकलते है जीव। छहढाला में आप पढ़ते हैं-

मेरु समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता याय।।

नरक में इतनी उष्णता है कि आपके यहाँ का लाल तवा इतना गर्म नहीं है और इतनी शीतलता है कि एक लाख योजन मोटा, चौड़ा, लम्बा लोहा एक क्षण में गल जाए या एक लाख योजन का गोला पल में जम जाए। आज कोई वस्तु गलाना हो तो इतनी अधिक हीट (गर्म) के साथ समय भी चाहिए लेकिन वहाँ क्षण भर में वस्तु पिघल जाएगी। कोयले के धधकते अंगारे भी नरक भूमि के समक्ष कुछ नहीं है जहाँ सागरों पर्वत नारकी जीवन व्यतीत करते है, क्या उन्हें वेदना नहीं होती ? उछलते कूंदते है लेकिन उपाय नहीं। प्यास लगती है, पानी दिखता है पर पीने का प्रयास करते है तो तेजाब से जल जाते हैं। शरीर की अकाल मृत्यु नहीं होती। छहढ़ाला में कहा गया है- .

Scanned with CamScanner

तिल-तिल करें देह के खण्ड, असुर भिड़ावै दुष्ट प्रचण्ड।।

आज के असाध्य रोग भी नरक के सभी रोग से सामने कुछ नहीं है। तिलोय पण्णत्ति, त्रिलोकसार खोलते है तो रोंगटे बड़े हो जाते है। नारकी सोचते है काश! उस समय मान जाते तो नरक में नहीं आना पड़ता। ऐसी यातना नहीं भोगना पड़ती। मुनि महाराज ने सत्य कहा था। अरे! ये (नरक) तो बहुत दूर की बात है- कैंसर (हॉस्पिटल) जाकर ही देख लो। किसी का गाल गला है किसी की दाढ़ तो किसी का चेहरा भद्दा हो गया। ऐसी हालत है न तो जीते में न तो मरते में ऐसी असाध्य तकलीफ होती हैं। एक व्यक्ति मेरे पास आया जिसका पूरा मस्तक पोला हो गया था। डॉ. ने यहाँ की चमड़ी निकाली, वहाँ लगा दी पर कोई फायदा नहीं। कैंसर यानी जीवन केन्सिल। मैंने पूछा ऐसी अवस्था क्यों हुई ? बोले-तम्बाकू खाने की आदत थी। मैंने कहा किसी ने रोका नहीं ? मंदिर और महाराजों के पास जाना बन्द किया क्योंकि वहाँ त्याग की बातें करते थे। शादी के समय मैंने अपनी पत्नी को पहली प्रतिज्ञा दिलायी थी कि इसके लिए कभी मना नहीं करोगे। अन्य वचन की कीमत नहीं है। हॉस्पिटल में व्यक्ति चींखता-चिल्लाता नजर आता है। डॉक्टर बेहोशी को नवद्या भक्ति पूर्वक आहार कराया या नहीं ? बिलखती हुई सारी बात सुना देती है, राजा उसे महल से निकाल देते है। इस पर्याय में मुश्किल से जीवन बिताकर अन्य पर्याय में शूकरी, कूकरी, सर्विणी आदि-आदि नाना पर्याय में धारण करके अंत में धीवर की पुत्रि दुर्गन्धा होती है तब कहीं उसका कर्म धुल पाता है इसलिए ध्यान रखिये- संतप्पनों की बात पर विश्वास रखो-दुर्लभ जीवन में भूलकर भी ऐसे पाप नहीं बांध लेना। जिससे गति या भव बिगड़ जाए। नरको में जाना पड़े। वे सौभाग्यशाली है जिनकी देशना लब्धि काम करती है क्योंकि सबकी काम नहीं करती। नरकों से तिर्यंच, तिर्यंच से नरक गति प्राप्त होती रहती है।

धन्य है उन प्राणियों को जो जिनवाणी की चार बातें ध्यान से सुनते हैं सावधान होते हैं- कभी ऐसी भूल न हो कि ऐसे कर्म बंध जाए। वे भवभीरू है। संसार से भयभीत होते हैं हिंसा नहीं करेंगे, हो जाएगी तो पश्चाताप करते हैं। मिथ्यादृष्टि कहते हैं उनकी आयु आ गई थी मरना था मर गया। अरे! इतने निष्ठुर हो कि आनन्द मना रहे हो पश्चाताप के स्थान पर।

यही सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि के मध्य की रेखा है। आज इतना ही समझकर सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का और यदि प्राप्त हो तो गया तो उसके वर्धन करने का पुरुषार्थ करें। इसी में जीवन की सार्थकता है।

जय बोलिए अभिनंदन नाथ भगवान की जय

अच्छी बाते ग्रहण करें

संकलन- श्रमणी आर्यिका विसुव्रतश्री माता जी

गुरुजी के आश्रम में शिष्य तो बहुत थे पर तीन शिष्य ऐसे थे कि जिनके कारण गुरुजी सदा चिंतित रहते। एक दिन उन तीनों को एक विनीत शिष्य के साथ एक बगीचे में भेजा तथा कहा कि शाम तक वहां रहना और शाम को मैं पुछूँगा कि तुमने क्या-क्या किया। वहाँ चारों बगीचे में गये तथा शाम को वापस आ गये तो गुरु ने अलग-अलग एक-एक शिष्य से पूछा कि तुमने वहां दिनभर क्या देखा ? एक तो दिन भर सोया था- क्या कहता तो दूसरे की बिना अनुमति के फल खाने के लिए माली था। अत: दर्द के मारे कराह रहा था। तीसरा आम, जामुन, इमली और नीम के पेड़ गिनता रहा, पर रास्ते में गिनती भूल गया। तीनों के सामने चौथे शिष्य को बुलाकर पूछा तो वह बोला-फल से लदी डालियाँ नीचे झुकी हुई थी तथा बिना फल वाली आसमान की और अकड़कर देख रही थी अत: इसका मतलब यह हुआ कि विनयवान उत्तम होता है और अभिमानी बिना फल वाली डाल के समान है। गुरु बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए तीनों शिष्यों को समझाते हुए कहा कि जीवन अनमोल है। कुछ अच्छी-अच्छी बातें सीखो, आलस्य छोड़ों, चोरी करना छोड़ों तथा जो पढ़ों उसे रखों तथा जहाँ भी कुछ सीखने की बात मिले वहाँ उसे आत्मसात करो। बाद में तीनों शिष्य भी गुरु के आदेश पर चलकर आदर्श छात्र बनें।

Scanned with CamScanner

आज्ञा विचय धर्म ध्यान

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

ॐ नमः सिद्धेभ्य-३, णमो अरहंताणं .... चत्रारि मंगलं ......

सिद्ध सम्पूर्ण भव्यार्थं सिद्धेः कारण-मुत्तमम्।
प्रशस्त दर्शन ज्ञान-चारित्र-प्रतिभादनम्।। १ ।।
सुरेन्द्र-मुकुटाश्लिष्ट पाद पद्माशु केशरम्।
प्रणमानि महावीर लोक त्रितय मंगलम्।। २ ।।
खम्मामि सव्व-जीवाणं, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती में सव्व -भूदेसु, वैरं मज्झं वा केणवि।। १ ।।
राम वंध पदोसं च हरिसं दीण भावय।
उस्सुगतं भयं सोग, रादे मरदिं च वोस्सरे।। २ ।।
हा! दुट्ठ कयं, हा ! दुट्ठ-चितिम, भासिय, च हा! दुट्ठं।
अंतो-अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।। ३ ।।
दव्वे खेते काले भावे म कदा-वराह सोहजयं।
णिदण-गहहण जुत्तो, मण-वच काएण पडिक्कमणं।।४।।
समता सर्व भूतेषु संयम, शुभ भावना
आर्त्त रौद्र परित्याग-स्तद्धि सामायिकं मतं।।५।।
जीविय मरणे लाहालाहे संजोग विप्पजोगे य।
बंधुरिय सुट दुक्खादो, समदा सामायियं णाम।।

प्रतिदिन की भाँति आज भी मन में ध्यान करने का भाव उत्पन्न हुआ है, परिणाम उत्पन्न हुए हैं और ध्यान की इस पवित्र वेला में मन निरन्तर उत्साहित हो रहा है। एक मात्र ध्यान के लिए ही मन प्रेरणा दे रहा है। मैं शुभ ध्यान करूँ, मैं सही ध्यान करूँ। मुझे ध्यान में जो आनन्द होता है, जो सुख होता है, जो शान्ति का संवेदन होता है वह एक अपूर्व-अपूर्व है। ऐसी ही आत्मा के विषय में ध्यान करने से शान्ति का अनुभव कभी नहीं किया था, कभी प्रयास भी नहीं किया था, इसका ज्ञान भी नहीं था। अब मुझे सामायिक की विधि ज्ञात हुई है। विधि पूर्वक की गई। सामायिक आत्म विशुद्धि को जागृत करती है। जिससे असंख्यात गुणी कर्मों की निर्जरा प्रतिक्षण होने लगती है। सच्चे साधक ध्यान के द्वारा कर्मों को जला देते है, समाप्त कर देते हैं। ध्यान की महिमा अपार है। हम ध्यान साधना में आर्त्त ध्यान और रौद्र ध्यान का त्याग करते है। बड़े प्रयत्न से हम इस और ध्यान नहीं ले जायेंगे क्योंकि ये दुध्यान कहे जाते हैं। संसार के कारण कहे जाते हैं। नरक निगोद के हेतु कहे जाते हैं। इसलिए उन दो ध्यानों को तो बिल्कुल नहीं करूँगा। धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान मोक्ष मार्ग में प्रयोजनीय कहे गये हैं। सच्चे साधक इन दो ध्यानों का आश्रय लेते हैं लेकिन पंचम काल में शुक्ल ध्यान नहीं होता। किसी को भी नहीं होता है।पंचम काल में जन्म लेने वाले कोई भी शुक्ल ध्यान को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसलिए पंचम काल में शुक्ल ध्यान का निषेध माना गया। अब रह गया तो मोक्षमार्ग में प्रयोजनभूत तो केवल एक ही रह गया धर्म ध्यान। धर्म का ध्यान अथवा धर्म में ध्यान करना, धर्म में मन लगाना, एकाग्र हो करके केवल धर्म हो धर्म दिखे वह धर्म ध्यान है। निश्चय में तो आत्मा का स्वभाव ही धर्म कहा गया है। अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य स्वभाव को धारण करने वाली अपनी आत्मा का यह अनन्त चतुष्टय धर्म कहे जाते हैं। आत्मा के गुणों को धर्म कहते हैं। आत्मा के स्वभाव को धर्म कहते हैं।

Scanned with CamScanner

योगीजन उस आत्म स्वभाव में लीन होते हैं। तल्लीन होते हैं। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र भी आत्मा का स्वभाव कहा गया है। वह भी आत्मा का धर्म है। वे उनका आश्रय लेते हैं और उसी में तल्लीन होते हैं तो सम्पूर्ण कर्मों का क्षय करके वे क्रमश: केवलज्ञान और निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं। जो निश्चय धर्म ध्यान की साधना में सफल नहीं हो पाते वे व्यवहार निश्चय धर्म ध्यान की भावना भाते हैं। मैं सिद्ध स्वभावी हूँ, मैं अनन्त ज्ञान स्वभावी हूँ, केवल ज्ञान हमारी आत्मा का स्वभाव है। अनन्त सुख हमारी आत्मा का स्वभाव है। अनन्त शक्ति पुंज मेरी आत्मा है, अनन्त शक्ति मेरी आत्मा का स्वभाव है और भी अनन्त गुणों से सम्पन्न मेरी आत्मा है। द्रव्य कर्म, भाव कर्म, वो कर्म से रहित मेरी आत्मा है। जब शरीर ही मेरा नहीं तो और कोई भी पदार्थ मेरा कैसे हो सकता है। पर पदार्थों से भिन्न ज्ञान स्वभावी मेरी आत्मा है। जब हम आत्मा का आश्रय लेते हैं, असीम-असीम शान्ति का संवेदन होता है और जब हम बाह्य जगत का आश्रय लेते हैं तो असीम असीम दुख और अशान्ति का संवेदन होने लगता है। यही कारण है योगीजन बाहर में नहीं अपनी आत्मा के अन्दर रहते हैं। स्वभाव का आश्रय लेते हैं। श्रावकजन निरन्तर इसकी भावना भाते है तो निश्चय धर्म ध्यान की भावना कही जाती है। जो इतना भी करने में सक्षम नहीं होते तो वे चार प्रकार के धर्म ध्यान का आश्रय लेते हैं। जिसमें पहला आज्ञा विचय नाम का धर्म ध्यान है। साधक इसका आश्रय लेकर चिन्तन करते हैं कि जो जिनेन्द्र देव ने कहा हैं जो केवलियों ने कहा है, सर्वज्ञ देव ने कहा है, जिनवाणी ने कहा है, निर्ग्रन्थ मुनि, भाव लिंगी संतों ने कहा है वह पूर्णत: सत्य है। हम उस पर विश्वास करते हैं। उसको ही पालन करने का यथाशक्ति पुरूषार्थ करते हैं। आसा विचय का अर्थ होता है आज्ञा में रहना, सीमा में रहना, मर्यादा में रहना। जो जैसा कहा है उसे वैसा ही स्वीकार करना, न उसमें कुछ कम और न उसमें कुछ अधिक मिलाना। भगवान के वचन यथार्थ होते है। वे वस्तु तत्व का सम्यक् प्रकार से निरूपण करते हैं। यदि उसको हम कुछ कम करें तो वह गलत हो जायेगा। कुछ अधिक करे तो भी गलत हो जायेगा। इसलिए कम और अधिक के बिना जैसा है जितना है, वैसा और उतना दृढ़ता से हृदय से स्वीकार करना आज्ञा विचय है। हे भगवन्! मैं कभी भी आपके द्वारा कहे हुए उपदेश के प्रतिकूल नहीं रहूँगा, नहीं जाऊँगा, स्वप्न में भी आपकी इस आज्ञा का उल्लघंन नहीं करूँगा। यह धर्म ध्यान उन ही लोगों को संभव है जिन्होंने गुरुकुल में रह करके गुरु आज्ञा का अभ्यास किया है। सुशिष्य, श्रेष्ठ शिष्य, अच्छे शिष्य जो होते है वे अपने हर कदम गुरु आज्ञा के अनुसार रखते हैं। गुरु की आज्ञा के बिना वे छोटे से छोटा काम भी नहीं करते हैं। गुरु आज्ञा के बिना वे कुछ भी नहीं कहते हैं। गुरु आज्ञा के बिना वे किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति नहीं करते है। प्रत्येक कार्य के लिये आज्ञा लेते हैं, पूछते हैं। जो शिष्य पूछ कर कार्य करता है मानते हैं कि शिष्य अबोध होता है। यदि वह अपने ज्ञान से कुछ निर्णय न ले सके तो उसे गुरु से पूछना चाहिए। मूलाचार ग्रंथ में मुनिजन की दस समाचार विधि कहीं गयी हैं। उसमें दो समाचार ऐसे है जिसमें कहा गया- एक तो पृच्छा कहा गया यानि प्रत्येक कार्य शिष्य पूछ कर करे। न मालूम वह करने लायक है अथवा नहीं। इस समय करना चाहिए अथवा नहीं, करने से लाभ मिलेगा अथवा आदि। इन सारी बातों के विषय में जब वह विचार करता है, तो एक ही निर्णय पर पहुँचता है कि निर्णय स्वयं की अपेक्षा गुरु से लूँगा। आज्ञा से लूँगा और वह गुरु के प्रति ऐसा आत्मा और श्रद्धा रखना कि वह मुझसे पुछता है इसलिए इसे शास्त्रों में पृच्छा कहा गया है। अन्य लोग इसे पृच्छना भी कहते हैं। पूछ कर कार्य करने में हानि कभी नहीं होती लेकिन बिना पूछे कार्य करने में सफलता भी मिल सकती है और असफलता भी मिल सकती है। पूछ कर कार्य करने में नियम से सफलता ही सफलता मिलती है। सम्मान मिलता है, आदर मिलता है प्रतिष्ठा मिलती है। असफल होने पर भी सभी का विश्वास और संबल मिलता है। बिना पूछे किसी कार्य को करने में असफलता मिलती है। गुरु वात्सल्य घटता है, विश्वास घटता है। आम लोगों का भी उसके प्रति सम्मान घटता है। सभी की दृष्टि में वह व्यक्ति स्वेच्छाचारी कहा जाता है जैसी इच्छा हुई वैसा कर लिया। मूलाचार में स्वेच्छारी के लिए पार्श्वस्थ कहा गया, अवंदनीय कहा गया। संत समूह उसे वंदना नहीं करते। स्वेच्छाचारी कभी भी किसी

Scanned with CamScanner

भी समस्याओं में उलझ सकता है और अपने मार्ग से पतित हो सकता है। इसलिए सच्चे साधक हर कार्य गुरु की आज्ञा से करते है, पूछ कर करते हैं। कार्य करने के पूर्व पूछने का महत्त्व रखता है। कार्य करने के बाद पूछने से कोई फायदा नहीं होता। जो कार्य कर लिया है संभवत: उसे गुरु आज्ञा नहीं देना चाहते थे कर लिया, तो यह आपने गलत कर लिया। इसलिए आज्ञा कार्य करने के पूर्व ली जाती है। कार्य करने के बाद का कोई मूल्यांकन नहीं रह जाता है।

सच्चे शिष्य इसलिए आज्ञाकारी कहे जाते है, आज्ञानुशील कहे जाते है। वे आज्ञा में रहते हैं इसलिए उनका जीवन स्तर अपनी सीमाओं से उठता है। और उठते-उठते बहुत ऊँचाई को प्राप्त कर लेते हैं। जो आज्ञा में नहीं रहते उनका स्तर गिरता है। गिरते-गिरते वे बहुत कुछ गिर जाते हैं। कितनी बार तो संभव से भी उन्हें हाथ धोना पड़ता है। विश्वास गिरता, वात्सल्य गिरता, सम्मान गिरता, प्रतिष्ठा गिरती और अन्त में उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है। इसलिए आचार्यों ने धर्म ध्यान में आज्ञा विचय रखा। आज्ञानुशील बनिए। पृच्छना के साथ समाचार विधि में प्रति पृच्छा रखा। यानि साधक इस बात का ध्यान रखे कि कौन सी बात कब, कहाँ और कैसे पूछना चाहिए। चलते-फिरते हर स्थानों पर, हर समय पूछना उचित नहीं होता है। यदि वे सामायिक कर रहे हैं, स्वाध्याय कर रहे हैं, लेखन कार्य कर रहे हैं, पढ़ रहे हैं, किसी को समझा रहे है, प्रवचन कर रहे हैं, उपदेश दे रहे हैं, शयन कर रहे हैं अथवा यूँ कहें कि किसी उद्दण्ड शिष्य को कन्ट्रोल करने में जो उद्‌बोधन अवस्था में बैठे हुए हैं इन सब अवस्थाओं में अथवा आहार कर रहे हैं, विहार कर रहे हैं उस समय में पृच्छा नहीं की जाती है। सुश्री शिष्य इन बातों को समझते हैं। जिन्हें ज्ञान नहीं होता वे इन बातों को नहीं समझ पाते। और यद्वा-तद्वा प्रवृत्ति कर लेते हैं। और अनुचित समय में पृच्छा करते है तो भी आचार्यों ने कहा-वह पृच्छा है ही नहीं। वह पूछना है ही नहीं क्योंकि इस मौके पर गुरु न तो आपकी बात समझ सकते हैं और न वे अपनी बात आपको समझा सकते हैं। ऐसे मौके पर क्या पूछे। सुयोग्य काल में शिष्य पूछता है। पूछने के साथ-साथ वह प्रति पृच्छा करता है। महत्त्वपूर्ण बात का निर्णय लेने के लिए हम जा रहे हैं। बड़े से बड़ा काम करने के लिए जा रहे है, कोई व्रत, नियम, संयम त्याग करने के लिए जा रहे हैं तो फिर हमारी इस बात के लिए हमारे गुरु ने सुना या नहीं सुना, कहीं ऐसा तो नहीं कि उनका उपयोग कहीं दूसरी जगह लगा हो और हम कह कर आ गये तो हमारा कहना बेकार है। वे सुन ही नहीं पायें, वे समझ ही नहीं पाये कि आप क्या कहना चाह रहे थे, शोरगुल चल रहा था, आवाज हो रही थी, उस समय आप कुछ का कुछ कह कर चले गये, तो वे कैसे आज्ञा देंगे। असमय में कोई व्यक्ति पूछे तो वे कुछ भी नहीं कह सकते हैं। इसलिए सुयोग्य समय में और उसके साथ यह भी ध्यान रखा जाता है कि जो मैंने कहा है उसको गुरुदेव ने सुना या नहीं। समझा अथवा नहीं। वे इस विषय में स्वीकृति देते हैं या नहीं। स्वीकारोक्ति वाक्य होते हैं जिसमें हाँ कहा जाता है, हाथ से इशारा दे दिया जाता है। मुख की प्रसन्नता से स्वीकृति दी जा सकती है। इत्यादि कारणों से वह निश्चित कर लेता है कि आज्ञा है हमारे गुरुदेव की। यदि गुरुदेव ने कुछ न कहा, चेहरा मोड़ लिया तो समझ लीजिए इस विषय में अभी स्वीकृति नहीं है।

सुयोग्य शिष्य केवल इन संकेतों से ही समझ लेता है। ज्ञानी शिष्य संकेतों से ही आज्ञा का निर्णय कर लेता है। जिनको इतना ज्ञान नहीं रहता उनको गुरु विशेष तरीके से समझाते हैं अथवा यूँ कहें कि वे उस मौके पर न समझा सकें तो अगल-बगल में बैठे हुए उनके शिष्य उनके अभिप्राय को समझ कर और उसके लिए संकेत देते है कि महाराज का अभिप्राय इस कार्य को करने का है अथवा नहीं करने का है। प्रति पृच्छा में दुबारा पूछा जाता है। संभवत: उस समय में भी वे न समझ सके तो तीसरी बार में भी वे पूछा जाता है। फिर भी न सुन पाये हो तो चौथी बार पूछा जाता है लेकिन नय के साथ सम्मान के साथ, सुयोग्य समय पर पूछा जाता है। बहुत कुछ बाते ऐसी होती हैं संभवत: जिससे आपका विरोध है, विवाद है और उसके सामने कोई बात ऐसी आ जाये और वे समझते हैं कि इस मौके पर में कुछ कहूँगा तो व्यक्ति भड़क जायेगा। तो वे केवल संकेत से काम कर लेते हैं। हाँ के लिए प्रसन्नता, ना के लिए चेहरा मोड़ लेना, बस यही उसके लिए

Scanned with CamScanner

सबसे बड़ी आज्ञा हो जाती है। जिसने अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया क्योंकि सच्चे गुरु जो भी आज्ञा देते हैं वह जिनेन्द्र देव और जिनवाणी के अनुसार ही देते है। हर शिष्य के लिए वे उन्हीं भगवान और जिनवाणी के अनुसार ही चलाते हैं। यही कारण है कि 'गुरु आज्ञा' कहा गया। मानि गुरु आज्ञा से बढ़कर और कुछ नहीं हैं। सच्चे शिष्य गुरु आज्ञा को पाकर आनन्दित होते हैं और ऐसा अवसर मुझे सेवा करने को मिला ये मेरा सौभाग्य है यानि गुरु आज्ञा के लिए सौभाग्यपूर्ण मानते हैं। आज्ञानी प्राणी तो वजनदारी मानता है। सिर पकड़कर बैठता है। और कभी ऐसे निपट अज्ञानी भी हो सकते हैं जो सामने ही मना कर दें कि हम सामायिक नहीं कर सकते, प्रवचन नहीं कर सकते। सोचिये यदि आपने ऐसा कुछ किया तो दुबारा क्या वे आपके लिए धर्म साधना या प्रभावना केलिये आज्ञा दे सकेंगे क्या ? क्या उनका उत्साह रहेगा क्या ? गुरु आज्ञा तो शिष्य के लिये पत्थर की लकीर होती है। पुस्तक में उपमन्यु, आरूणि, का उदाहरण प्रसिद्ध है कि जिन्होंने गुरु आज्ञा को पालन करने में अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की। खेत से बहने वाला पानी या बांध को बांधने का प्रयास किया। जब नहीं बन पाया तो स्वयं ही लेट गया कि हम गुरु आज्ञा का पालन पूर्ण रूपेण करेंगे। प्राणपन से करेंगे। ऐसे उदाहरण है। कहीं उपमन्यु का जो अंधा और आश्रम की गायों को जंगल में चरा रहा था अचानक वह एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया जहाँ बिना मोड़ का कुंआ था और वह उस कुएं में गिर गया। लेकिन गुरु भक्त था। सच्ची भक्ति हो तो किसी का कुछ भी नहीं बिगड़ता। वह कुएं में गिरा। उसकी भक्ति को देख किसी देव ने उसका सहयोग करना चाहा, निकालना चाहा। २-३ दिन का भूखा था, उसके लिए भोजन देना चाहा। लेकिन वह शिष्य इतना आज्ञा शील था, उसने कहा कि मैं गुरु की आज्ञा के बिना न तो कुछ लूँगा न अन्य प्रकार की कोई स्वीकृति दूँगा।

आप यदि करूणा रखते हैं तो मेरे गुरु से आज्ञा लेकर आइये। बन्धुओ! देव उसका इतना भक्त हो गया कि बतलाते हैं कि गुरु आज्ञा, गुरु भक्ति से वह इतना प्रभावित हो गया कि यह सदैव सदा-सदा का दास बन गया। सेवक बन गया।

गुरु भक्ति तभी प्रारंभ हो सकती है जबकि गुरु के प्रति श्रद्धा हो ओर उनकी आज्ञा में रहने की कटि बद्धता हो। तभी सच्चे मायने में गुरु भक्ति कही जा सकती है। ये ही संस्कार जिनेन्द्र आज्ञा पर व्यकित के लिए आधारित कर देते है। जो शिष्य गुरु के अनुशासन में ढल गया वह जिनेन्द्र देव के अनुशासन में ढल गया और उसके अन्दर में आत्मानुशासन आ गया, ऐसा कहा जाता है। आज्ञा विचय धर्म ध्यान इसी का नाम है कि मैं कभी भी आज्ञा के विरुद्ध नहीं चलूँगा। हे भगवन्! मुझे इतनी शक्ति देना कि मैं कभी भी आपकी और गुरु की आज्ञा के प्रतिकूल न रहूँ। सदैव-सदैव जीवन के अन्तिम क्षणों तक हे प्रभु मैं आपके और गुरु के बताये हु पद चिन्हों पर चलता रहूँ और अपने जीवन को सफल बनाऊँ। आज्ञा विचय है अगर कदाचित मुझसे भूल हो जाये, कहीं धोखा हो जाए, कहीं स्तूति न रहे तो मुझे क्षमा करना और हम उसके विषय में दण्ड लेगें, प्रायश्चित लेंगे। ऐसे भाव जब सच्चे साधक के होते हैं तो इन भावनाओं और चर्या से ही वह धर्म ध्यान का फल प्राप्त कर लेता है। पहले आज्ञा विचय धर्म ध्यान को हम सदैव-सदैव ध्यान रखेंगे। इसकी कीमत करेंगे और निन्तर गुरु के आशीष और आदेश के अनुसार जीवन अच्छे संस्कार में ढालेंगे। ऐसी पुनः पुनः हम भावना भाते हैं, दृढ़ता से हम संकल्प लेते है कि हम सदैव गुरु आज्ञानुसार रहे। उनके स्वप्न में भी प्रतिकूल न रहें।

प्रतिदिन चेनल पर देखिये-

१. जिनवाणी चेनल - दोपहर १.००बजे प्रवचन

२. पारस चेनल - शंका समाधान (समय : दोप. १२.३० बजे)

३. V- Star News : Mobile Channal प्रवचन एवं शंका समाधान
प्रात : ७.३० बजे एवं सांय ७.३० बजे

Scanned with CamScanner

श्रद्धा दीप जलाओ

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

हे चैतन्य! आत्म-उत्थान का मार्ग सम्यक्-श्रद्धा है। आस्था पाषाण में भगवान दिखा देती है। आस्था का शास्ता होता है। जिसके पास आस्था है उसके पास सब कुछ है। आस्था है तो उसे शास्ता मिल सकता है। जिसके पास आस्था नहीं है, उसे कभी भी शास्ता के दर्शन नहीं हो सकते। भगवान को खोजने की आवश्यकता नहीं है, आस्थावान् को खोजने की आवश्यकता है। तिमिर घनघोर छाया है चारों तरफ एक-मात्र मिथ्यात्व का, अनास्था का। धनवानों की, स्वार्थी भक्तों की भीड़ तो दिखती है, पर श्रद्धावानों की नहीं। श्रद्धा में स्वार्थ की गन्ध नहीं होती। श्रद्धा पञ्चपरमेष्ठी के चरणों में होती है, समदृष्टि को लेकर होती है। स्वार्थ व्यक्ति-विशेष को देखता है, उसमें धर्म नहीं दिखता, धर्मात्मा का भेष मात्र दिखता है और कुछ समय के लिए स्वार्थ निहित श्रद्धा होती है। स्वार्थरूप श्रद्धा घास की अग्नि तुल्य है, जो प्रबलरूप में प्रकट होती है, पर कुछ ही समय में शान्त हो जाती है। धर्म पर जो नि:स्वार्थ आस्था है, वही सत्यरूप आस्था है, चिरस्थाई है। श्रद्धावान् सम्यक्दृष्टि का ज्ञान/चर्या मोक्षप्रदायक है। श्रद्धाविहीन की सम्पूर्ण क्रियाएँ दीर्घ संसारवृद्धि का कारण है।

आचार्य भगवान् कुन्दकुन्द स्वामी ने ग्रन्थराज 'रयण सार' जी में भी कहा है-

दाणं-पूया सीलं, उपवासं बहुविहंपि खवणंपि।
सम्मजुदं मोक्खसुहं, सम्मविणा दीह संसारम्।।

अर्थात् सम्यग्दर्शन से युक्त दान, पूजा, शील अनेक प्रकार के उपवास कर्मक्षय में कारणभूत मोक्षसुख के कारण हैं और सम्यग्दर्शन के बिना दीर्घसंसार के कारणभूत है। वर्तमान में मिथ्यात्व के तूफान प्रबलता को धारण किए है, जिससे जनमानस सम्यक् पथ से च्युत होता जा रहा है। आवश्यकता है गिरते को उठाने की। अन्तिम तीर्थेश भगवान् वर्द्धमान महावीर स्वामी के निर्वाण-महोत्सव को हम सभी मनाते आ रहे हैं, मना रहे हैं दीपकों के माध्यम से, जिसे धनिकवर्ग का पर्व बना दिया गया है। पर आज हमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता दिख रही है। जड़ दीपों को जलाने के साथ चैतन्य दीपकों के बारे में भी विचार करना पड़ेगा। जड़ दीप तो परस्पर में बुझे को जला लेते हैं पर चैतन्य दीप जलते को बुझा देते हैं। दीप जलाना सीखों, बुझाना नहीं। तात्पर्य यह कि श्रद्धा की ज्योति को जलाओ, श्रद्धा-दीप न बुझने पायें। प्रत्येक प्राणी की परिणति में आ जाए कि मैं टूटती आस्थाको मजबूत करूँगा। हमारी चर्या, क्रिया, वाणी ऐसी बने जिससे वर्तमान पीढ़ी सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति को न भूल पाये। ज्ञान का सदुपयोग करने की आवश्यकता है। कमल, कागज एवं बुद्धि का व्यर्थ व्यय नहीं होना चाहिए। यदि हमारी लेखनी से, भाषण से, चर्या से अनेकों की आस्था समाप्त होती है तो वह अल्पज्ञता का प्रतीक है। दीपावली-पर्व को श्रद्धावली-पर्व के रूप में मनायें। स्वयं श्रद्धावान् बनें, दूसरे को बनाएँ। सवद्मार्ग में चलें, चलायें, तभी दीपावली-पर्व सार्थक होगा। यही भगवान महावीर स्वामी के प्रति हमारी भक्ति होगी। प्राणीमात्र के प्रति सद्भाव बनाये रखें, भेदभाव की खाई को समाप्त कर अभेद-अवस्था को प्राप्त कर वीर-निर्वाण को मनाकर स्व-निर्वाण की सिद्धि में लग जायें।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अत: सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

Scanned with CamScanner

'अभीक्षण ज्ञानोपयोगी गुरुवर'

श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

जगती के कोहिनूर, सृष्टि के ईश्वर, चारो अनुयोग के प्रकाण्ड विद्वान परम पूज्य युग प्रमुख श्रमणाचार्य, उपसर्ग विजेता, राष्ट्रसंत गणाचार्य गुरुवर श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की अध्ययन व शिक्षा शैली अपने आप में अनुप्रमेय है।

आगम के प्रति आपकी ललक श्रमण संस्कृति के लिए एक चिनौती सिद्ध हुई है। जहाँ आजके साधुवर्ग आगम को छोड़ लौकिक कथा कहानियाँ, कविता व मुक्तकों का प्रयोग कर प्रवचनों में तालियाँ बजवाते हैं वहीं आप श्री आगम के श्लोक व महापुरुषों के दृष्टातों से रोचक बना जैन सिद्धांत के रहस्य को श्रोताओं के मन मस्तिष्क में प्रवेश करा देते हैं।

स्थाई ही नहीं चलते विहार में भी आप शिष्यों को क्लास पढ़ाते तथा उनसे सबक को भी सुनते हैं यही देख श्रवण बेलगोला के भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी ने आपके संघ को चलती फिरती युनिवर्सिटी कहा है।

लोहारिया में हाथ के फेक्चर जैसी बड़ी तकलीफ में भी आपके अध्ययन व क्लास में अंतर नहीं आया अपितु दूसरे दिन ही देवगत स्तोत्र जैसे न्याय ग्रंथ की क्लास प्रारंभ की। आपने धवला जी को १६ पुस्तक तथा जय धवला जी की ६ पुस्तकों की सफल वाचनाएँ की है और अभी भी जारी हैं।

श्रुतज्ञ शिरोमणी पूज्य गुरुवर नि:सदेह ही आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी हैं, क्योंकि आपका एक भी क्षण अध्ययन ओर शिक्षा से अछूता नहीं रहता है। संपूर्ण दिन के साथ-साथ रात्रि में भी कभी १२ बजे, २ बजे और प्रात: ३ बजे से आप अध्ययन लेखन में संलग्न हो जाते हैं इतना ही नहीं स्वप्न में भी आपकी पुस्तक और कलम नहीं छूटती है।

३.११.२०१६ भिण्ड में प्रात: आपने स्वप्न सुनाया- जिसमेंआप संघस्थ साधुओं को बोर्ड पर लिखकर क्लास पढ़ा रहे हैं।

२३.१२.२०१६ मेहगांव में प्रात: आपने जो स्वप्न सुनाया- उसमें आप आचार्य माघनंदीकृत शास्त्रसार समुत्त्य ग्रंथ के सूत्रों पर प्राकृत भाषा में श्लोक बना रहे हैं, उसमें भेयं अथवा पयारं शबद का प्रयोग करें श्लोक के अक्षर कम ज्यादा न हो जायें यह भी आप सोच रहे हैं श्लोक कम्पलीट कर आपकी नींद खुली, और सबसे पहले स्वप्न में बनाया गया वह श्लोक डायरी में नोट किया, उसी के साथ-साथ श्लोक और बना प्रात: स्तुति स्तोत्र के बाद संघस्थ साधुओं को वे तीन श्लोक अर्थ सहित सुनाये और भी कई बार स्वप्न में आप प्रतिक्रमण करते हैं तो कभी भक्तियाँ कभी-कभी तो सामायिक भी स्वप्न में हो जाती है और जब नींद खुलती है तो पुन: उस क्रिया को करते हैं।

अध्ययन के क्षेत्र में आपने अपने संघ के साधुओं को बाल विज्ञान भाग-१ से लेकर महापुराण, पद्मपुराण, हरिवंश पुराण आदि प्रथमानुयोग, चौबीस ठाणा, गो.जी., गो.के., तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, लब्धिसार, क्षपणासार, धवला को १६ पुस्तके, जयधवला की ६ पुस्तके आदि करणानुयोग, श्रावकाचार, भगवती आरधना आदि चरणानुयोग के तथा इष्टोपदेश, समाधितंत्र, से लेकर राजवार्तिक समयसार, प्रवचनसार, परमात्मप्रकाश अष्टपाहुड आदि द्रव्यानुयोग के ग्रंथों को पढ़ाया है। इनके अतिरिक्त लघुसिद्धान्त कौमुदी, मध्य सिद्धान्त कौमुदी, कातंत्ररूपमाला, सुबोध व्याकरण, प्राकृत व्याकरण तथा परीक्षा मुख सूत्र, न्याय दीपिका, प्रेमरत्नमाला, आप्तमीमांसा नयचक्र आदि व्याकरण और न्याय ग्रंथों का अध्ययन कराया है।

संघ के साधुओं को दी गयी उक्त शिक्षा आपके प्रकाण्ड विद्वान की सफल साक्षी है। अत: हे मुक्तिपथ के सच्चे पथिक 'गुरुवर' आपकी यह ज्ञानाराधना आपको परमात्मा बना देगी। तीर्थंकर प्रकृति की कारणभूत आपकी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी भावना निश्चित ही आपको केवलज्ञान के उच्च धरातल पर विराजमान कर देगी और आज की यह गुरुवाणी भविष्य में अरिहंत वाणी बन जन मानस के करणाञ्जलि में अमृत सिंचन करेंगी।

पूज्य गुरुवर के राष्ट्रीय रजत आचार्यपदारोहण दिवस पर त्रिभक्ति पूर्वक बारम्बार नमोस्तु...।

Scanned with CamScanner

निस्पृहता

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

एक बार धर्म सागर जी महाराज दिल्ली में थे तब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को उनके दर्शन करने आना था। जैसे ही इंदिरा गांधी दर्शनार्थ, आचार्यश्री की वसतिका में आई तो, किसी एक व्यक्ति ने आकर कहा कि-आचार्य श्री आप सिंहासन पर बैठ जायें, क्योंकि आचार्य श्री जमीन पर बैठे थे। शायद जमीन पर ही लेटे होंगे, जिससे उनके शरीर पर धूल लगी थी और वह व्यक्ति आचार्य श्री के शरीर पर लगी धूल को जल्दी-जल्दी झड़ाने लगा। आचार्य श्री ने कहा अरे-अरे! क्या कर रहे हो? उसने कहा-आपके शरीर पर धूल लगी है तथा पुनः सिंहासन पर बैठने की प्रार्थना की। तब आचार्यश्री ने कहा- नहीं, मैं तो यहीं ठीक हूँ, मुझे नहीं बैठना। इंदिरा गांधी हैं तो क्या हुआ, आना हो तो आयें, न आना हो तो न आयें, मेरे को उनसे कुछ लेना-देना नहीं, मेरे लिये तो सभी समान हैं। यह बात इंदिरा गांधी को सी.आई.डी. के माध्यम से पता चली तो सी.आई.डी. ने कहा- कि ऐसे साधु के पास नहीं जाना चाहिये, क्या फायदा जाने से? तब इंदिरा गांधी ने कहा- कि नहीं, ऐसे साधु के दर्शन करने मैं जरूर जाऊँगी तथा ऐसे निस्पृही संत के दर्शन करना ही चाहिए। बंधुओ, यह थी आचार्य श्री की निस्पृहता।

रात्रि भोजन त्याग से सुख-शांति

श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

मानव प्रकृति से दिवा भोजी है, रात्रि भोजी नहीं। जिन घरों में रात्रि भोजी लोग नहीं रहते उन घरों में स्वर्गमयी सुख शांति होती है। महिलाओं को भोजनशाला से कम से कम १२ घण्टे मुक्ति मिल जाती है। जिससे परिवारजनों के साथ आमोद-प्रमोद के लिए समय अधिक मिलता है, बच्चों को माता से प्यार, पढ़ाई और संस्कार का समय अधिक मिलता है। रात्रि भोजन त्याग करने से जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना सहज और सरल हो जाता है, जो ज्ञान साधना और स्वध्याय के लिए परमोत्तम समय होता है।

जैसे भोजन तैयार होने के बाद वर्तन में ८-१० घंटे रखा रहने पर सड़ जाता है जैसे ही रात्रि भोजन करके सो जाने पर आमाशय में भोजन पड़ा-पड़ा सड़ जाता है। उसमें नये एन्जाइम और बेक्टीरिया आदि पैदा होते हैं जो आदमी के स्वभाव को क्रोधी, तामसिक, रोगी और अति निद्रालू बना देते हैं जो बुद्धि को नष्ट कर देते हैं। एक कहावत है 'अधिक भोजन रोग पैदा करता है अधिक निद्रा बुद्धि को नष्ट (नाश) करती है।' इन सब बातों को देखते हुए यह कहा जाता है कि जल्दी सोना, जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ संपन्न, समृद्धशाली और बुद्धिमान बनाता है। जिस परिवार में ऐसी व्यवस्थाएँ और नियम होंगे वह परिवार सहज ही स्वर्ग जैसी सुख शांति वाला होगा।

हँसते रहो हँसाने के लिए

१ **दादी जी** अरे! संजू, तुमने सोते समय मेरी नाक में तेल क्यों डाल दिया था?

संजू - दादी जी, आपने ही तो कहा था कि जिस चीज से घर्र-घर्र की आवाज आती हो, उसमें तेल डाल देना चाहिए।

२. **टीचर** - नेहा तुम्हारे सभी उत्तर सही हैं पर तुम्हारी लिखावट पढ़ने में नहीं आ रही है।

नेहा - सर आज मैं अपने पापा से कहूँगी कि वे अपनी लिखावट में सुधार करें।

३. **निन्नी** - मम्मी क्या आपके टीचर ने ए के बाद बी, सी, डी नहीं सिखाया।

मम्मी - हाँ पर क्यों?

निन्नी - फिर आप पापा को ए के बाद जी क्यों कहते हो।

कुमारी प्रीति जैन, भिण्ड

Scanned with CamScanner

ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

प्रथम तीर्थंकर की पारणा एवं श्री १००८ शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ भगवान के कल्याणकों से पवित्र हस्तिनापुर की धरा पर महासंघाधिनायक, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ८० पिच्छि ससंघ का ७.१.२०१८ रविवार को मंगल पदार्पण हुआ।

इस अवसर पर समस्त संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ जैन स्कूल के बच्चे एवं समग्र जैन-जैनेत्तर समाज ने पूज्य गुरुवर की भव्य आगवानी की। जैन स्थानक, तारणतरण स्थल एवं दिगम्बर बड़े मंदिर आदि सभी स्थानों पर भक्तगणों ने पूज्य गुरुवर के पाद-पृच्छाल एवं आरती की गई। भगवान शांति कुन्थु, अरहनाथ की मनोज्ञ प्रतिमाओं के दर्शन कर संघ ..... पर पहुँचा यहाँ संतों की आहारचर्या सम्पन्न हुई।

दोपहर में कैलाश पर्वत की वंदना के पश्चात् संघ जम्बूद्वीप पहुंचा यहां के पीठाधीश श्री रवीन्द्र भट्टारक जी ने पाद-पृच्छालन कर पूज्य श्री की आगवानी की एवं सभी स्थानों से अवगत कराते हुए वंदना संपन्न कराई। तथा अपने दो शब्दों में आस्था के पुष्प बिखेरते हुए कहा- आंतरिक भक्ति भगवान को खींच ही लेती है कई वर्षों से श्रमणी गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माता जी की भावना थी कि गणाचार्य विरागसागर जी का विशाल संघ हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में आयें। झांसी युगप्रतिक्रमण के अवसर पर मैंने माता जी की भावना को आचार्य भगवन् के समक्ष रखा और जब दिल्ली की ओर आचार्य श्री के विहार की चर्चा सुनी तो सभी को अत्यंत हर्ष हुआ। आज उनकी भावना पूर्ण हुई यदि माता जी यहाँ होती तो निश्चित ही उनके हर्ष का पारावार न रहता ।

पूज्य गणाचार्यश्री श्रमण परम्परा के महान आचार्य है आपने बहुत सारी दीक्षाएँ प्रदान की है समता, सरलता की रश्मियों के साथ आपका ज्ञानरूपी सूर्य संपूर्ण जगत को आलोकित कर रहा है यह सब आचार्य विमलसागर जी का आशीर्वाद है। मेरी भावना है आप वर्तमान में सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता के रूप में विख्यात हो। ऐसी भावना के साथ आपके चरणों में नमोस्तु-३

इसी अवसर पर पूज्य गणाचार्य गुरुवर ने मंगल उद्बोधन में कहा-प्राय: बड़े-बड़े शास्त्र पढ़ने से लोग घबराते है लेकिन गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी ने शास्त्रों के पृष्ठों को मूर्तरूप दे दिया। जिसे देखने लोग दौड़-दौड़कर आते हैं। जिस कार्य को बड़े-बड़े आचार्यों ने नहीं किया वह कार्य माता जी ने करके दिखा दिया। उनकी ज्ञान के प्रति रूचि भी सराहनीय है। माता जी यहां नहीं है फिर रवीन्द्र भट्टारक जी ने माता जी का प्रतिनिधित्व किया है इसकी मुझे खुशी है। माता जी ससंघ एवं रवीन्द्र जी को मेरा बहुत बहुत शुभाशीर्वाद है।

विरागामृत

- जो अपने दोषों को कल पर छोड़ता है वह महादोषी है।
- आत्मनिंदा स्वसाक्षी और गर्हा गुरु साक्षी में की जाती है।
- पश्चाताप किये गये अपराध को तत्काल धो देता है।
- दोषों को छिपाने से आत्मा दोष मुक्त नहीं हो सकती।
- घर में माँ से और संघ में गुरु से किसी गलती को न छिपायें।
- दूसरों की निंदा करने वाला एक दिन स्वयं निंदनीय बन जाता है।
- दूसरों के बोलने के पूर्व हमें स्वयं अपनी गलती खोज लेना चाहिए।
- आत्म निंदा और गर्हा से रहित आलोचना और प्रतिक्रमण नहीं होता।
- साधुओं का प्रतिक्रमण बुराई रूपी कचड़े को दूर कर देता है।
- दोषरूपी खटास की लगार भी गुणों रूपी दुग्ध का दूषित कर देती है।

Scanned with CamScanner

महावीर का निर्वाण, जीवन निर्वाह नहीं-जीवन निर्माण का प्रतिफल है

श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी

जीवन निर्वाह के लिये पुरुषार्थ करना कोई खूबी नहीं अपितु संस्कार आगम प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया से मात्र मनुष्य जाति ही गुजर रही हो, सो बात नहीं अपितु सम्पूर्ण पशुता भी इसी प्रक्रिया से गुजर रही है। सम्पूर्ण नारकीयता भी इसी प्रक्रिया से गुजर रही है, अर्थात् प्रत्येक जीवात्मा जीवन का निर्वाह करता है। जीवन निर्वाह के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं। कोई फटे-पुराने, जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों को पहनकर जीवन का निर्वाह करता है तो कोई सुंदर-सुंदर फैशनों से परिपूर्ण वस्त्र परिधानों से अपने जीवन का निर्वाह करता है। कोई मनुष्य हलुआ-पूड़ी, स्वादिष्ट व्यंजनों को खाकर अपने जीवन का निर्वाह कर रहा है तो कोई व्यक्ति रूखी रोटी नमक खाकर अपने जीवन का निर्वाह कर रहा है। जीवन निर्वाह का तरीका अलग-अलग हो सकता है किन्तु उद्देश्य में कोई अन्तर नहीं। दोनों का ही उद्देश्य जीवन का निर्वाह करना है और मजे की बात तो ये है कि पशु भी जीवन निर्वाह के उद्देश्य से मनुष्य की बराबरी पर है और तो और ठीक है पशु अपने जीवन का निर्वाह करते हुये जितने आनंदित देखे जा सकते हैं उतने मनुष्य आनंदित दिखाई नहीं देते। सच तो यह है कि मनुष्य का निर्वाह करने का तरीका उसके विवेक पर नहीं अपितु बुद्धि पर निर्भर करता है। और बुद्धि सदैव उदासना से परिचय कराती है।

महावीर जीवन निर्वाह को संसार की दिशा में बढ़ाया हुआ कदम ही मानते हैं। जबकि मनुष्य चाहे तो संसार के दुःखों से मुक्त हो सकता है। संसार के दुःख मनुष्य को विरासत से उपलब्ध हैं। किन्तु दुःखों में जीना मनुष्य का स्वभाव नहीं अपितु अपनी शक्ति को पहचान कर दुःखों का अन्त कर देना ही मनुष्य होने की सार्थकता है। महावीर जीवन निर्वाह को बल नहीं देते अपितु दुःख मुक्ति का जो उपाय है उसे उद्घाटित करने की प्रेरणा देते हैं। महावीर की दृष्टि में खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, यह सब जीवन निर्वाह है और संसार मुक्ति, दुःख मुक्ति इनके लिये किया गया उपाय, पुरुषार्थ, जीवन निर्माण है। हम आज तक जीवन निर्वाह की प्रक्रिया से तो गुजरते आये किन्तु जीवन निर्माण की ओर कभी हमने ध्यान ही नहीं दिया। महावीर का निर्वाण, जीवन निर्वाह की नहीं अपितु जीवन निर्माण की फलश्रुति है। जीवन निर्वाह की यात्रा संसार तक है, जीवन निर्माण की यात्रा महानिर्वाण पर पहुँचती है।

जीवन का उद्देश्य निर्वाह नहीं अपितु निर्वाण होना चाहिये, और निर्वाण के लिये निर्माण की प्रक्रिया अपनानी ही होगी। निर्माण का अर्थ है, स्वर्ण पाषाणं का अग्नि को समर्पित होना। और जो शुद्ध स्वर्ण की उपलब्धि है वह निर्माण का प्रतिफल है। इसी प्रकार जीवन निर्माण के लिये आत्मा को संस्कारों की अग्नि से गुजरना होगा। और तब तक अग्नि का संस्कार चाहिये जब तक शुद्ध की उपलब्धि नहीं हो जाती। शुद्ध की उपलब्धि ही निर्वाण है। निर्वाण में कुछ भी अशुद्धि नहीं रहती। जब तक किंचित् भी अशुद्धि है, तब तक निर्माण की प्रक्रिया है। अपनी अशुद्धि और आत्मशुद्धि की विचारणा भेद का न होना ही जीवन निर्वाह है। हम विराट की सत्ता को उपलब्ध हों यही हमारी निर्यात है। सिद्धत्व हमारी पर्याय में प्रकट हो यही हमारा विवेक है। सिद्धत्व की उपलब्धि ही परम आनन्द है।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-

ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ	-	5000/-
ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ	-	2500/-
ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

Scanned with CamScanner

आत्मचिन्तन

(प.पू. गणा. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महामुनिराज की शिष्या
समाधिस्थ श्रमणी आर्यिका विसोहीश्री माता जी की नित्य डायरी से आत्मचिन्तन

हे आत्मन्! तू अब सभी संकल्प-विकल्पों को छोड़कर अपने ज्ञानपद में लीन हो जा उसी में संतुष्ट रह, इसी में तृप्त रह तभी तुझे सुख की प्राप्ति होगी।

हे जीव! अनादि काल से मोह रूपी विशाच के द्वारा तू संसार में भ्रमण कर रहा है अव तो जाग कुछ तो सोच, तेरी अमूल्य निधि तो तेरे अंदर ही छिपी हुई पड़ी है उसे खोज। फिर देख कितने आनंद की प्राप्ति होगी...।

हे जीव! बाह्य जालों की गन्दी गठरी को निकालकर दूर फैक दे, अन्यथा मानापमान के ये विकल्प तुझे अपने लक्ष्य की ओर नहीं बढ़ने देंगे, और तेरी साधना में बाधक बनेंगे।

हे जीव! बाह्य वस्तुओं में अपने उपयोग को मत जोड़ कि वह सुंदर है या विकृत, तू अपने उपयोग को आत्मा से बाहर मत निकलने दे तभी तेरे कार्य की सिद्धि होगी।

हे अज्ञानी जीव! कर्मोदय में आने वाले मोह, राग-द्वेष से तू अपने उपयोग को क्यों विकार रूप परिणाम कर रहा है यही विकारी परिणाम तो संसार वृद्धि का कारण है, जरा सोच कर तो देख...।

हे आत्मन्! अपने कषाय भावों को रोक दे, मन को वश में कर, निरंतर दुख देने वाले आर्त ध्यान को छोड़कर अपने मन को धर्मध्यान में स्थिर कर समता भाव में स्थिर रहकर तू अपना कल्याण कर।

हे जीव! तूने जिनेन्द्र देव द्वारा कही गई सल्लेखना धारण की है, तो उसे सफल बनाने के लिए सजग हो जा। अपने ज्ञान-ध्यान में स्थिर हो, तब तेरे सारे विकल्प छूट जायेंगे और तेरे लक्ष्य की भी सिद्धि हो जायेगी।

नोट- शेष अगले अंक में देखें....

गुरुवर मेरे विराग सिन्धु श्री

गुरुवर मेरे विराग सिन्धुश्री, जगत का करते है कल्याण।
आत्म ज्ञान को ज्योति जगाते, औ करते धर्म का ध्यान।
जहां वहां गुरुवर है जाते,
प्रवचन दे समझाते है।
करो साधना अंतर मन से,
प्रभुवर के गुण गाते है।।
नगर पथरिया में जन्में है, हुए विरागी पाया सम्मान।
गुरुवर मेंरे विराग सिन्धुश्री, जगत का करते है कल्याण।
धन्य हो गयो मेरा धरणि
धन्य हुआ गुरु का जीवन।
धन्य हुए गुरु गणाचार्यश्री,
हुआ गुरु का मन पावन।।
गायें गुरु की महिमा कितनी, पाया उनमें सम्यक्ज्ञान।
गुरुवर मेंरे विराग सिन्धुश्री, जगत का करते है कल्याण।
धन्य हो गये मात पिताश्री,
जन्म दिया तु गुरुवर का।
पाया उनके विरागी जीवन,
पाया पथ है निजधर का।।
संघ बड़ा है गुरु गणाचार्य का, बने गुरु है सम्यकज्ञान।
गुरुवर मेरे विराग सिन्धुश्री, जगत का करते है कल्याण।
गुरुवर तुमसे यही प्रार्थना,
मेरा भी कल्याण करो।
हे समाधी का माप हमारा,
गुरुवर मुझ पर ध्यान करो।।
गाता गीत 'करुण' गुरु तेरा, अंत समय पर रखना ध्यान।
गुरुवर मेरे विराग सिन्धुश्री, जगत का करते है कल्याण।

स्व. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

Scanned with CamScanner

आत्मा की शरण में ही स्वतंत्रता का फूल खिलेगा

आचार्य विनम्रसागर जी

भवकानन् में हमें ऐसा कोई आदमी दिखाई नहीं देता जो अपने और दूसरे की जरूरत न हो और जिसको किसी भी प्रकार का भय भी न हो जहाँ पर अपना ही अपना हो, अपनी ही सत्ता पर हो और अपना ही सत्व हो। यह भी सही है कि सभी के हृदय से पूछो तो सभी यही चाहते हैं कि मुझे किसी की शरण न लेना पड़े। एक बूढ़ा पिता एवं वृद्ध माँ भी यही चाहती है, एक पुत्र भी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है, एक लड़की भी स्वयं जीना चाहती है किसी की दासता है कि हम सभी पराधीनता को प्राप्त हैं यह सही है कि जब तक हम अपने भीतर बैठे परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं कर पाते उसका वेदन नहीं कर पाते तब तक हमारी आत्मा मरण धर्मा ही बनी रहती है वह जन्म और मरण को ही जीवन समझती हैं, परतंत्रता में स्वतंत्रता पाने का प्रयास ही पुरुषार्थ है और वह पुरुषार्थ जिसके द्वारा किया जावे वह ही धर्म है जिससे स्वतंत्रता हासिल हो वह ही धर्म है। ऐसी स्वतंत्रता का फूल केवल अपनी आत्मा की शरण में जाने पर अपनी आत्मा की बात को हृदय से स्वीकार करने पर ही खिलेगा, बाहर की वस्तुओं से नहीं।

अंतरंग हृदय की बात को आत्मसात् करके न स्वीकारने पर मृत्यु को बढ़ावा मिलता है। आत्मा की शरण लेने पर मौत भी मौत के घाट उतर जाती है। पराधीन को शरण मानने पर हमारे अंदर भय के काँटे पैदा हो जाते हैं यदि हम कांत में शांति से बैठकर यह खोजें कि हम क्या चाहते हैं ? तो हर आदमी का ही नहीं हर प्राणी का यही उत्तर होगा कि सुख चाहते हैं। सुख शांति की चाह हर दिल में बैठी हुई है। यदि हम हृदय की बात को मानकर हृदय मेंही अवस्थित रहें मन की मान्यता को नकार दें तो यह बात सही है कि हमारे अंदर व बाहर के जीवन में सुख शांति के फूल ही खिलेंगे। अशांति नाम मात्र की भी नहीं होगी। मृत्यु का मिटना बहुत सरल है। भय को तभी मिटाया जा सकता है जब उसका सामना कर लिया जावे। जब तक हम भय का सामना नहीं करेंगे भय का भूत हमें भ्रमित करता ही रहेगा। भय और भ्रम में कोई अंतर नहीं है भ्रम के कारण ही भय निर्मित हो गया है।

जीवन मरणशीलता नहीं अमरत्व को लिए हुये है यह बात ऐसे सत्य हे कि हर आदमी अमरत्व को प्रणाम करता है. हर आदमी अमरत्व को पाने के लिए प्रयासरत है, मरण से किसी को भी प्रेम नहीं हैं। स्वतंत्रता ही अमरत्व का अनुभव कराने में समर्थ है। वह स्वतंत्रता ऐसी हो जो किसी से भी प्राप्त न हुई हो और किसी से भी नष्ट न हो सके यदि चंद वस्तुओं या प्रतिकूलता से स्वतंत्रता नष्ट होती है तो वह दो कौड़ी की स्वतंत्रता परतंत्रता ही है। जीवन में धर्म के गुल लगाकर जीवन को जीवंत गुलशन बनाना तभी हो सकेगा जब हम परमात्मा के हाथ में अपने जीवन की बागडोर सौंप देंगे। परमात्मा उसी का ध्यान रखता है जो परमात्मा का ध्यान रखता हो यह कथन सुप्रसिद्ध है। अत: हम सभी को चाहिये की अपने परतंत्र जीवन में स्वतंत्रता का फूल खिलाएँ, स्वतंत्रता ही स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक है परतंत्रता मौत को निमंत्रण है। जीवन में जीवंतता हमारा धर्म है मौत हमारे अपराध की सजा। फूल तभी महकेगा जब हम स्वयं अपनी आत्मा को अच्छे सद्गुणों से सुसज्जित करेंगे, इसी में हमारे अमूल्य जीवन की सफलतम आकांक्षा छिपी हुई है।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. www.ganacharyaviragsagar.org.
2. www.ganacharyaviragsagarwixsite.com/viragsagarji
3. Facebook : viragvani
4. Email : viragsagarji@gmail.com
5. youtube : upsargvijetaguru virag
6. सं. सूत्र what'sapp no 9009462216

Scanned with CamScanner

विनयांजलि

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के कमल रूपी श्री चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु-३

महाराजश्री मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे परम पूज्य १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी व परम पूज्य १०८ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज मुझे गुरु के रूप में प्राप्त हुए है। गुरुदेव मेरे जीवन में परम पूज्य १०८ मुनि श्री विहर्ष सागर जी महाराज (ससंघ) का भी बहुत बड़ा योगदान है जब से मुनिश्री विहर्ष सागर जी महाराज का गाजियाबाद चातुर्मास हुआ था तब से समय समय पर मुझे मार्ग दर्शन मिला। बहुत बार जब में धर्म के मार्ग से लड़खडाता था तब ये आपके महासूपत मुझे बचा लेते थे संयोग से अपने नगर से निकट आपके ये सच्चे लाल मुझे मिल भी जाते थे।

मुझे आपके प्रथम दर्शन भिण्ड में निशांत जी के साथ तथा दूसरे दर्शन अम्बाह में प्राप्त हुए है। अब दीक्षा के बाद यहाँ बड़ागांव अतिशयक्षेत्र पर हुए। गुरुदेव गाजियाबाद वाले आपका बहुत गुणगान करते हैं गुरुदेव ये बेचारे आपका क्या गुणगान करेंगे मुझे ऐसा प्रतीत होता है स्वयं सौधर्म इन्द्र तथा बृहस्पति भी आपका गुणगान करने में समर्थ नहीं हो सकता।

गुरुदेव मुझे तो अब दर्शन से ऐसा प्रतीत होता है कि आप तीनों आचार्यों का तो अवश्य ही तीर्थंकर पद पर सुशोभित होकर मोक्ष जाने का टिकिट कन्फर्म हो चुका है। आपको रत्नत्रय प्राप्त हो चुका है। गुरुदेव जब आप तीनों तीर्थंकर पद पर शुसोभित होकर अससंख्यात भव्य जीवों को अपने साथ गणधर या मुनि पद से सुशोभित कराकर सिद्धालय प्रवेश करो तो मुनि श्री विहर्षसगर जी महाराज को गणधर पद देना तथा अपने इस छोटे नन्हे मुन्ने अबोध बच्चे क्षुल्लक रचित सागर को भी एक छोटा सा मुनि बनाकर अपने साथ सिद्धालय में प्रवेश कराना।

गुरुदेव अपने बच्चे की गलतियों को क्षमा करते हुए अपने बच्चे के ऊपर अपने हाथ की छाया रखना जिससे जब तक मुझे मोक्ष प्राप्त हो तब तक मैं र्निविकारी रहूँ। तथा देव शास्त्र गुरु के बताये मार्ग पर चल सकूँ।

आपका अबोध नन्हा मुन्ना बालक- क्षु. रचित सागर

मुझे ज्यादा कुछ तो आता नहीं हैं फिर भी आचार्य महाराज बोल रहे हैं तो बोलने का प्रयास कर रहा हूँ। यूँ कहा जाता है कि प्रात: उठकर यदि किसी गलत व्यक्ति को देख लें तो फिर सारा दिन बिगड जाता है और यदि कोई अच्छा व्यक्ति दिख जाये तो सारा दिन अच्छा जाता है। आप सभी बहुत भाग्यशाली है आपको यहाँ आचार्य विरागसागर जी महाराज के ८० साधुओं के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं मुझे लगता है निश्चित ही आपका संपूर्ण जीवन सफल होगा।

जब तक जीवन में कोई अच्छा आदर्शवान व्यक्ति हमें नहीं मिलता तब तक हम अच्छे पिता अच्छी माँ, अच्छे संत नहीं बन सकते। पुराने समय में बहुत बड़े-बड़े विद्वान हुए उन्हें बहुत ज्ञान था। साधुओं के दर्शन के लिए तरसते रहे साधु बनने की भावना भी रखते रहे लेकिन साधुओं का समागम न मिलने से साधु नहीं बन पाये। आज इतने साधुओं को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है पूज्य आचार्य गुरुवर की सरलता उनके वात्सल्य को देख मेरा हृदय गद्‌गद हो गया आपके दर्शन से मेरा भी जीवन सफल हो गया।

आचार्य भारतभूषण जी महाराज

आज दिगम्बर संतों की प्रत्यक्ष साधना देख में श्रद्धा से नत मस्तक हूँ। इतनी ठण्डी में व्यक्ति कपड़ों पर कपड़े पहनता है वहीं ये महान संत निर्वस्त्र रहते हैं। वैसे तो मैं समय-समय पर संतों के दर्शन करता हूँ। जैन समाज ही नहीं समस्त सरधना नगरवासी मुझे भाई की तरह मानते हैं। मुझे बड़ी खुशी है कि आज मुझे इतने अधिक जैन संतों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला आचार्य श्री सदैव अपनी कृपा मुझ पर बनायें रखें इसी भावना से आपके चरणों में नमोस्तु-३

माननीय विधायक संगीत सोम जी सरधना (उ.प्र.)

सरलता की मूर्ति

आचार्यों के आचार्य और महानसंघ के नायक होने पर भी पूज्य गणाचार्य भगवन् में जो सरलता है वह अद्वितीय है। आज समस्त सरधना नगर आपकी चरणरज से पवित्र हो गया है। हर मन आपके दर्शन कर सौभाग्य मान रहा है।

Scanned with CamScanner

गाजियाबाद में आपके चातुर्मास की चर्चा सुनी तभी से ह्रदय में आश थी जो आज पूर्ण हुई। हे गुरुवर! अब सभी सरधना वासियों की प्रार्थना स्वीकार करो और कुछ समय का प्रवास सरधना में करो ताकि सभी को आपकी अमृतवाणी सुनने को मिल सके। यहाँ का बच्चा-बच्चा आपसे जुड़ने को लालायित है गुरुवर। हमारी सभी गल्तियों को माफ कर थोड़ा समय प्रदान कीजिये ताकि सरधना आपकी साधना से पवित्र हो सके।

नमन जैन, सरधना (उ.प्र.)

वात्सल्य मूर्ति

हे श्रमणों के सरताज गणाचार्य विरागसागर जी महाराज इस कलियुग में भी आपके संघ की कठिन चर्या देख मैं बड़े आश्चर्य में हूँ। इतनी ठंडी में इतना विहार शायद ही कोई विरले संत करते होंगे। आपके आने से सरधना का बच्चा-बच्चा हर्षोल्लास से पूर्ण है युवाओं में नई जाग्रति देखने को मिली है। इतने महान पद पर होने के बाद भी आपका वात्सल्य देख में अभीभूत हूँ मेरे अंदर भी समाज के बच्चों के प्रति ऐसा वात्सल्य गुण आये।

आपके चरणों में सरधना में चातुर्मास करने की प्रार्थना के साथ बारम्बार नमोस्तु-३।

अध्यक्ष- सरधना

योद्धा कौन?

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

योद्धा बहुत हैं
इस वसुधा पर
जो हाथी के दांत
खींच सकते,
सिंह की मूँछ को
उखाड़ सकते,
भुजंग के मस्तक से
मणि को
निकाल सकते हैं।
अहो!
वे योद्धा
किस काम के
जो
काम के वशीभूत
शील स्वभाव को
भंग कर बैठते हैं।

परिवर्तन

जीवन में यथार्थ ज्ञान से जो परिवर्तन होता है, वही सच्ची साधना है। मोक्षमार्ग में बाह्य वजन हटाने के साथ-साथ आंतरिक वजन को भी हटाना पड़ता है। संयम धारण करनेमें, घर-परिवार छोड़ने मात्र से काम नहीं चलता, बल्कि यहाँ तो इनके साथ बुरे संस्कारों, प्रमाद, दुश्रुति, विकथा, अपध्यान, आर्त्त-रौद्र अशुभ ध्यान/ क्रियाओं की तिलांजलि देकर आंतरिक अशुभ विकल्पों को हटाया जाता हैं, तभी परिवर्तन होता है। अन्यथा साधक उसी नाविक की तरह हे जिसने लंगड़ को खोला न हो और रात भर नाव खेता रहा हो। सुबह देखा तो वहीं के वहीं। व्यर्थ का श्रम हुआ। मंजिल तो काफी दूर है। हे साधक! तुमने यह दुर्लभ साधना पाई है, जो अमूल्य सत्य है जीवन का, सो अपनी आत्मा में लगे बुरे संस्कारों को दूर करें अन्यथा अनादि काल से चली आ रही भटकन यूँ ही चलती रहेगी और शायद हम धोखे में होंगे, हम मृग मरीचिका की तरह पानी की खोज में चमकती रेत की ओर दौड़ेंगे पर हाथ कुछ भी नहीं लगेगा, कण्ठ सतत् तृषातुर ही बना रहेगा। अत: शुभ्रज्योत्सना की तरह खुद को निर्मल परिणामों से पवित्र बनायें, तभी परिवर्तन, पंचपरावर्तन से बचाने में सहायक सिद्ध होगा।

समयोचित शिक्षायें से साभार

Scanned with CamScanner

इष्ट प्रार्थना

आचार्य विभवसागर

पूज्य बड़े बाबाजी मेरे, ये वरदान वरो।
हम भक्तों को अपने जैसा, हे भगवान करो।।
भक्त आपके कुण्डलपुर में, कुण्डल से झूमें,
कुण्डलपुर के भव्य जिनालय, लोक शिखर चूमें।।
दर्शन का फल सम्यग्दर्शन, दे अज्ञान हरो।
हम भक्तों को अपने जैसा, हे भगवान करो।।
पूज्य बड़े बाबा ....

परम विशुद्धि वाले भगवन्! आतम शुद्धि दो।
चौंसठ ऋद्धि वाले भगवन्! स्वातम सिद्धि दो।।
ध्यान धरा पर आप विराजे, इतना ध्यान धरो।
हम भक्तों को अपने जैसा, हे भगवान करो।।
पूज्य बड़े बाबा ....

पूज्य केवली श्रीधर स्वामी की वचनावलियाँ।
कुण्डलपुर का कण-कण पावन, जल वृक्षावलियाँ।।
संयम पथ पर चलूँ निरन्तर, ऐसा ज्ञान वरो।
हम भक्तों को अपने जैसा, हे भगवान करो।।
पूज्य बड़े बाबा ....

वर्द्धमान सरवर कहता है, झिलमिल-झिलमिल के।
प्रेम भाव हो सब जीवों में, रहना हिलमिल के।।
जैनधर्म है तारणहारा, तारो और तरो।
हम भक्तों को अपने जैसा, हे भगवान करो।।
पूज्य बड़े बाबा ....

छतरपुर, २००९ **संस्तुति सरिता 'कृति से साभार'**

अच्छे खेल खेलना

१. खेल विद्यार्थियों के लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि भोजन।
२. अच्छे खेल शिक्षाप्रद ही होते हैं।
३. अच्छे खेल स्वास्थ्य प्रद होते हैं।
४. मन के बोझ को हल्का करने के लिए अच्छे खेल आवश्यक हैं।
५. खेल से आलस्य एवं तन्द्रा दूर होती है।
६. पाचन शक्ति को ठीक करने के लिए तथा भूख बढ़ाने के लिए खेलना जरूरी है।
७. खेल समय तक तथा उचित मात्रा तक ही शोभा देता है। अत: खेल के इतने व्यसनी भी नहीं बनना चाहिये कि हम कार्य व कर्त्तव्यों को भूल जायें।
८. पैसों की बाजी लगाकर खेलने वाले खेल एवं जुआँ आदि नहीं खेलना चाहिए।
९. दूसरों को कष्ट देने वाले या मारने वाले खेल नहीं खेलना चाहिए।

गणा. श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की कृति 'संस्कार सुरभि' से साभार

Scanned with CamScanner

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका **द्रव्यार्थिक नय किसे कहते हैं?**

समाधान **(१) देखो (स. सा. आ. गा. १३)**

द्रव्यपर्यायात्मके वस्तुनि द्रव्यं मुख्यतयानुभावयतीति द्रव्यार्थिकः।

अर्थ- द्रव्य पर्यायात्मक वस्तु में जो द्रव्य को मुख्य रूप से अनुभव करावे सो द्रव्यार्थिक नय है।

(२) पज्जय गउणं किच्चा दव्वंपि य जो हु गिह्णइ लोए-भणिओ सो दव्वत्थिय।। न.च.वृ. १८९।।

अर्थ पर्याय को गौण करके जो इस लोक में द्रव्य को ग्रहण करता है, उसे द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

शंका- **इसे और भी स्पष्ट कीजिए?**

समाधान - देखो (प्र.सा./त.प्र. ११४) में इस प्रकार समझाया है-

पर्यायार्थिकमेकान्तनिमीलितं विधाय केवलोन्मीलितेन द्रव्यार्थिकेन यदावलोक्यते तदा नारक तिर्यङ्मनुष्य देव सिद्धत्व पर्यायात्मकेषु विशेषेषु व्यवस्थितं जीव सामान्यमेकमवलोकयतामनवलोकित विशेषाणां तत्सर्वं जीव द्रव्यमिति प्रतिभाति।

अर्थ - पर्यायार्थिक चक्षु को सर्वथा बंद करके जब मात्र खुली हुई द्रव्यार्थिक चक्षु के द्वारा देखा जाता है तब नारकत्व, तिर्यकत्व, मनुष्यत्व, देवत्व और सिद्धान्व पर्याय स्वरूप विशेषों में रहने वाले एक जीव सामान्य को देखने वाले और विशेषों को न देखने वाले जीवों को 'यह सब जीव द्रव्य है' ऐसा भासित होता है।

शंका - **द्रव्यार्थिक नय के कितने भेद हैं?**

समाधान - देखें (आ.प. २०३)

शुद्धाशुद्ध निश्चयौ द्रव्यार्थिकस्य भेदौ।

अर्थ - शुद्ध निश्चय व अशुद्ध निश्चय दोनों द्रव्यार्थिक नय के भेद हैं।

शंका - **शुद्ध द्रव्यार्थिक नय किसे कहते हैं?**

समाधान - देखें (आ.प.सू.१८५)

शुद्ध द्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्ध द्रव्यार्थिकः।

अर्थ- शुद्ध द्रव्य ही है अर्थ और प्रयोजन जिसका सो शुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

शंका- **शुद्ध तत्त्व क्या वचन के अगोचर है?**

समाधान- हाँ, देखा (प.पं.वि.१/१५७) में कहा है कि-

Scanned with CamScanner

शुद्धं वागति वर्तित तत्त्वं

अर्थ- शुद्ध तत्व वचन के अगोचर है।

शंका- शुद्ध द्रव्यार्थिक नय के विषय को स्पष्ट कीजिए?

समाधान- शुद्ध द्रव्यार्थिक नय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की प्रधानता से वस्तु को विषय करता है यथा-

द्रव्यापेक्षा :जो पस्सदि अप्पाणं अबद्ध पुट्ठं अणण्णयं णियदं।

अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्ध णयं वियाणाहि।। (स.सा.१४)

अर्थ- जो नय आत्मा को बंध रहित और पर के स्पर्श से रहित, अन्यत्व रहित, चलाचलता रहित, विशेष रहित, अन्य के संयोग से रहित ऐसे पाँच भाव रूप अवलोकन करता है उसे हे शिष्य! तू शुद्ध नय जान।

क्षेत्रापेक्षा : शुद्ध निश्चयनयेन स्वदेहा भिन्ने स्वात्मनि वसति यः तमात्मानं मन्यस्व (प.प्र.टी.२)

अर्थ - शुद्ध निश्चय नय अर्थात् अभेद नय सेअपनी देहसे भिन्न रहता हुआ वह निजात्मा में वसता है।

कालापेक्षा : शुद्ध द्रव्यार्थिक नयेन नर नारकादि विभाव परिणामोत्पत्ति विनाश रहितम्।(पं.का.ता.वृ. ११/२७/१९)

अर्थ- शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से नर नारकादि विभाव परिणामों की उत्पत्ति तथा विनाश से रहित हैं।

भावापेक्षा : (१) शुद्ध द्रव्यार्थिकेन शुद्ध स्वभावः। (आ.प. १७४)

अर्थ - शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से शुद्ध स्वभाव है।

(२) शुद्ध नयेन केवल मृण्मात्रवन्तिरूपाधि स्वभावम्।

अर्थ - शुद्ध नय से आत्मा केवल मिट्टी मात्रकी भांति शुद्ध (निरूपाधि) स्वभाव वाला है।

शंका - अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय किसे कहते हैं?

समाधान - (१) (आ.प.सू. १८६) देखें

अशुद्ध द्रव्य मेवार्थः प्रयोजन मस्येत्य शुद्ध द्रव्यार्थिकः।

अर्थ - अशुद्ध द्रव्य ही है अर्थ या प्रयोजन जिसका, सो अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

शंका - क्या व्यवहार नय अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है?

समाधान - हाँ, देखें (श्लो.वा. २/१/७/२८/५८५/१)

व्यवहार नयोऽशुद्ध द्रव्यार्थिकः।

अर्थ - व्यवहार नय अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

(ध.पु.९/४/१/४५/१७१/३)

पर्याय कलङ्कितया अशुद्ध द्रव्यार्थिकः व्यवहार नयः।

अर्थ - व्यवहार नय पर्याय (भेद) रुप कलंक से युक्त होने से अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है।

शंका - उपर्युक्त वाक्य को स्पष्ट कीजिये?

समाधान - देखो (प्र.सा.परिशिष्ट नय न. ४६)

अशुद्ध नयेन घट शराव विशिष्ट मृण्मात्रवत्सोपाधि स्वभावम्।

अर्थ - अशुद्ध नय से आत्मा घट, शराब आदि विशिष्ट (अर्थात् पर्यायकृत भेदों से विशिष्ट) मिट्टी मात्र की भांति रागद्वेष सोपाधि स्वभाव वाला है।

शंका - अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय की क्या वचनों के अगोचर है?

समाधान - नहीं, देखें (प.पं.वि. १/१५७)

इतर वाच्यं च तद्वाचकं.... प्रभेद जनकं शुद्धेतरत्कल्पितम्।

अर्थ - अशुद्ध तत्त्व वचन गोचर है उसका वाचक तथा भेद को प्रकट करने वाला अशुद्ध नय है।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

Scanned with CamScanner

चर्बी कम कर, स्वस्थ जीवन जीयें

संकलन : श्रमणी आ. विवक्षाश्री माता जी

तुलसी की कोमल और ताजे पत्ते को पीसकर दही के साथ सेवन करने से चर्बी बनना कम होता है। तुलसी के पत्तो का १० ग्राम रस पानी (१०० ग्राम) में मिलाकर पीने से शरीर का ढीलापन व अधिक चर्बी नष्ट होती है।

- ❖ त्रिफला, चिकुटा, चित्रक तथा वायविंडग को मिलाकर काढ़ा में गुगुल को डालकर सेवन करें। त्रिफला चूर्ण गाढ़े चासनी के साथ १० ग्राम की मात्रा में दिन में २ बार (सुबह-शाम) पीने से लाभ होता है।
- ❖ गिलोय, हरड़ बहेड़ा और आंवला मिलाकर काढ़ा बनाकर इसमें शुद्ध शीलाजीत मिलाकर खाने से मोटापा दूर होता है और पेट की अधिक चर्बी कम होती है।
- ❖ गिलोम ३ग्राम और त्रिफला ३ ग्राम को कूटकर चूर्ण बना लें इसे सुबह-शाम चासनी के साथ चाटने से मोटापा कम होता है।
- ❖ गुगुल, त्रिकुट, त्रिफला और काली मिर्च बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को अच्छी तरह एरण्ड के तेल में घोटकर रख लें। यह चूर्ण ३ ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मोटापा की बीमारी ठीक होती है।
- ❖ ४ पीपल पीसकर, १/२ चम्मच चासनी मिलाकर सेवन करें। पीप्पल १५० ग्राम और सेंधानमक ३० ग्राम को अच्छी तरह पीसकर २१ खुराक बना लें। यह दिन में एक बार सुबह खाली पेट छाछ के साथ सेवन करें, इससे वायु के कारण पेट की बढ़ी हुई चर्बी कम होती है।
- ❖ ५० ग्राम पालक के रस में १५ ग्राम नींबू रस मिलाकर पीने से मोटापा समाप्त होता है।
- ❖ जवाखार ३५ ग्राम ओर चित्रकमूल १७५ ग्राम का चूर्ण बना लें। यह ५ ग्राम चूर्ण एक नींबू रस, चासनी और २५० ग्राम गुनगुने पानी में मिलाकर सुबह खाली पेट लगातार ४०दिनों तक पीयें। इससे शरीर की फालतू चर्बी समाप्त हो जाती है और शरीर सुडौल होता है।
- ❖ जौखार चूर्ण आधा-आधा ग्राम दिन में तीन बार पानी के साथ सेवन करने से मोटापा दूर होता है।
- ❖ चित्रक की जड़ का बारीक चूर्ण चासनी के साथ सेवन करने से पेट की बीमारियों और मोटापा समाप्त होता है।
- ❖ प्रतिदिन अनन्नास खाने से स्थूलता नष्ट होती है क्योंकि अनन्नास चर्बी को नष्ट करता है।

सबसे पहले मोटापे से पीड़ित रोगी को समझना चाहिए कि जब तक आप अपने खान-पान में सुधार नहीं करेंगे, तब तक आपका मोटापा दूर नहीं हो सकता है। सादा भोजन और व्यायाम शरीर में अधिक चर्बी को पिघलाता है। मालिश उसमें सहायता करती है और रोगी के शरीर में कमजोरी नहीं आने देती है, साथ ही चर्बी घटने पर शरीर के मांस को ढीला नहीं पड़ने देती, बल्कि मालिश शरीर को मजबूत तथा आकर्षक बना देती है। इसलिये मोटापा कम करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने भोजन में सुधार करे तथा प्रतिदिन व्यायाम करें। ठण्डी मालिश मोटापा, दूर करने में विशेष सहायता करती है, इसके अलावा तेल मालिश या सूखी मालिश भी की जा सकती है। वैसे तेल मालिश का उपयोग कम ही करे तो अच्छा है क्योंकि तेल मालिश तभी अधिक लाभ देती है जब रोगी उपवास कर रहा हो।

रोगी को उबली हुई सब्जियों, क्रीम निकला दूध, संतरा, नींबू आदि खट्टे फल तथा १-२ चपाती नियमित रूप से कई महिने तक लेनी चाहिए। रोगी को तली और भुनी हुई चीजों को अपने भोजन से पूरी तरह दूर रखना चाहिए। उपचार के दौरान रोगी को बीच-बीच में १-२ दिन का उपवास भी रखना चाहिए। नींबू पानी अधिक मात्रा में पीना चाहिए। इस प्रकार के भोजन व उपचार से कुछ दिनों तक तो रोगी को कमजोरी महसूस होगी, परन्तु कुछ दिनों के अभ्यास से जब शरीर इसका आदि हो जाएगा, तब रोगी अपने को अच्छा महसूस करने लगेगा।

Scanned with CamScanner

रजत प्रतियोगिता २०१७ के प्रतियोगी की सूची

प्रतियोगिता -१

प्रथम - श्रीमती आकांक्षी सौरभ जैन, इन्द्रपुरी कॉलोनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

द्वितीय - कुमारी खुशबू (बिट्टू) कैलाशचंद जी मिठया, हिमाचल गली टीकमगढ़

तृतीत - श्री अंकुर कैलाश चंद जी जैन, सलेहा पन्ना

सांत्वना १. श्रीमती रूचि अनुज जी जैन, शंकर नगर दिल्ली

२. श्री निधि संजय जी जैन, शंकर नगर दिल्ली

३. श्रीमती सुमन सुरेश चंद जैन राजगढ़ दिल्ली

४. श्री अनिता राजेन्द्र सिंग संघवी सवाई माधोपुर (राजस्थान)

५. श्री सिद्धार्थ विनयजी कोठारी, शांतिनगर जयपुर (राजस्थान)

प्रतियोगिता -२

प्रथम - श्री वंदना अतुलजी जैन, अशोक नगर दिल्ली

द्वितीय - श्रीमती समीक्षा अंकित जैन परवारी मोहल्ला छतरपुर

तृतीत - श्री सोनल/ अशोक जैन, किला मंदिर भिण्ड

सांत्वना १. कुमारी झलक श्री दिनेश जैन, रामनगर, गाजियाबाद

२. श्रीमती मंजू श्रीसुरेश चंद जैन, देवली टोंक (राजस्थान)

३. श्री शिवानी श्री जितेन्द्र जैन देवली टोंक (राजस्थान)

४. कुमारी समीक्षा अनिल सराफ, पथरिया दमोह

५. श्रीमती तनु अम्बुज जैन, सूर्यनगर गाजियाबाद

प्रतियोगिता -३

प्रथम - श्री मुमुक्षु कशिश जैन, शामली

द्वितीय - श्री सुषमा जैन वी.पी. फार्मा डुंगरपुर (राज.)

तृतीत - श्री अंजना अरंजय जैन, शालीमार गार्डन (गाजियाबाद)

सांत्वना १. श्रीमान पवन फूलचंद जी सिंघई टीकमगढ़

२. श्रीमती सुषमा पवन मिठया टीकमगढ़

३. श्रीमती रीना प्रदीप जैन, कविनगर (गाजिया.)

४. श्रीमती इन्द्रा नेमचन्द्र जैन, वैशाली (गाजिया.)

५. श्रीमती विजयलक्ष्मी प्रेमकुमार, जयपुर (राज.)

प्रतियोगिता -४

प्रथम - श्री टीकमचंद जी स्व. भंवरलाल जैन, शान्ति नगर, जयपुर (राजस्थान)

द्वितीय - कुमारी आकृति श्री आजाद जैन, टीकमगढ़

तृतीत - श्री अनिल श्री शिखरचंद जी जैन, चन्द्रनगर (गाजियाबाद)

सांत्वना १. श्रीमती अनिता श्री सुरेन्द्र जी जैन, हिसार (हरियाणा)

२. श्री नीलम श्री बसंत जैन, इन्द्रिरापुर (गाजि.)

३. कुमारी रूचि स्व. सुरेश जी जैन मेनवार ललितपुर

४. श्रीमान हेमन्त कुमार माणिकचंद जी पाटनी, नेमिनगर, इंदौर

५. श्री मंजू अनिलजी जैन, गुड बाजार अम्बालाकेंट

प्रतियोगिता -५

प्रथम - कुमारी पल्लवी श्री वीरेन्द्र जैन, टीकमगढ

द्वितीय - श्री अमित श्री अनिल जैन, चंडीगढ़

तृतीत - श्री रौनक श्री सतीश धर्मावत, भीण्डर (राज.)

सांत्वना १. श्री हर्षा बहन, संजय कु. दोसी, ईडर (गुज.)

२. श्री प्रगति जैन विजय जैन, छतरपुर (म.प्र.)

३. श्री स्वाती जैन दीपक जैन, भीण्डर (राज.)

४. श्री शशी जैन अनिल जैन सेक्टर १८, चंडीगढ़

५. श्री संगीता जैन राकेश बजाज, जबलपुर

प्रतियोगिता -६

प्रथम - श्री शांति जैन अशोक कु. जैन, देवली टोंक (राजस्थान)

द्वितीय - श्रीमती इन्द्रा जैन नवीनजी जैन, सलेहा पन्ना

तृतीत - श्री अन्जु जैन मुकेश जैन, राजगढ़ दिल्ली

सांत्वना १. नेह जैन राजीव जैन, शंकर नगर दिल्ली

२. कविता जैन संजय जैन, प्रतिमपुरा, दिल्ली

३. संध्या जैन सुरेशचंद जैन, दमोह म.प्र.

४. प्रियंका जैन तरूण जैन, कटनी म.प्र.

५. मीना जैन विनोद जैन, चमनगंज सीपरी उ.प्र.

Scanned with CamScanner

प्रतियोगिता -७

प्रथम - श्रीमती नीलम जैन स्व. प्रदीप जैन, लक्ष्मीनगर दिल्ली

द्वितीय - श्रीमती सरोजजैन श्री सनतजैन, मडावरा उ.प्र.

तृतीत - श्रीमती मधु जैन श्री राजीव जैन, बडौत

सांत्वना १. श्री राखी जैन संजीव जैन, शंकरनगर दिल्ली

२. श्री उमा जैन आदीश जैन, शंकर नगर दिल्ली

३. श्री रजनी जैन बुधसेन जैन, रोहिणी दिल्ली

४. श्री स्वाती जैन हिमांशु जैन, कासिंग रिपब्लिक गाजियाबाद

५. श्रीमती सुमन जैन, कमलचंद जैन, भीकनगाँव

प्रतियोगिता -८

प्रथम - श्रीमती शशि रानी श्री हेमन्त जैन, मोहनपुरी मेरठ

द्वितीय - श्री तन्मय जैन, अभिनंदन जैन, मडावरा ललितपुर (उ.प्र.)

तृतीत - श्री अशु जैन सुरेश चंद जैन, देवली टोंक

सांत्वना १. श्रीमती मालती जैन सुखलाल जैन सिंघई, सिद्धार्थनगर, इंदौर

२. कुमारी समीक्षा श्री राजेन्द्र जी पाटनी, दुर्ग

३. श्रीमती शिवा श्री धर्मेन्द्र जैन, मडावरा

४. श्री संचित श्री विमलप्रसाद जैन, हौसकाजी, दिल्ली

५. श्री अभिषेक श्री सुशील जी जैन, राजनगर गाजियाबाद

प्रतियोगिता -९

प्रथम - श्रीमती वीणा जैन डॉ. पी.सी. जैन, कविनगर, गाजियाबाद

द्वितीय - श्रीमती अनीता श्री संजय कासलीवाल, पांडिचेरी तमिलनाडू

तृतीत - श्रीमती अनीता जैन श्री धमेनद्र जैन, महावीरपुरा ललितपुर

सांत्वना १. कुमारी तानी जैन, अमित जैन, भजनपुरा दिल्ली

२. श्रीमती राजुलमती श्री व्रतेशचंद जैन, किशोरगंज पन्ना

३. श्री अर्चना श्री नवीनजैन, नवीन शाहदरा दिल्ली

४. श्री गुलाबचंद जी कालूराम जी, आजादपुरा दिल्ली

५. श्रीमती अनिलरानी पवन जी जैन, चिकलाना सरहारनपुर (उ.प्र.)

प्रतियोगिता -१०

प्रथम - अरूणा जैन श्री विजय जैन, प्रति विहार दिल्ली

द्वितीय - सोनिया जैन श्री पंकज जैन, शंकर नगर, दिल्ली

तृतीत - निलिमा जैन श्री राजेश सेठी, बुरहानपुर

सांत्वना १. निक्की जैन श्री निखिल अजमेरा, बानापुरा इटारसी (म.प्र.)

२. सुनीता जैनश्री महीपाल जैन, राजगढ़ दिल्ली

३. मधु जैन श्री सुरेन्द्र जैन, वैशाली गाजियाबद

४. रितु जैन श्री अजय जी जैन, बुरहानपुर म.प्र.

५. मिनाक्षी जैन मनोज जी जैन, कृष्णकुंज दिल्ली

प्रतियोगिता -११

प्रथम - श्री मूंज जैन अरूण कुमार जैन, रामनगर शाहदरा दिल्ली

द्वितीय - श्रीमती सिलोचना प्रकाश जैन, टीकमगढ़

तृतीत - श्रीमती सुनीता अजय जी जैन, छतरपुर

सांत्वना १. श्रुति जैन श्री संजय जी जैन, शंकर नगर, दिल्ली

२. श्वेता संजय जैन, पांडिचेरी तमिलनाडू

३. सारिका जैन श्री उमेश जैन, शाहदरा दिल्ली

४. पारूल जैन श्री विनित जैन, अम्बाला छावनी

५. उषा जैन श्री इन्द्रचन्द जैन, सहारनपुर

प्रतियोगिता -१२

प्रथम - मंयक जैन श्री माणिकचन्द्र जी बड़जात्या, जशपुर छत्तीसगढ़

द्वितीय - किरण जैन श्री महेन्द्र जैन, टीकमगढ़

तृतीत - अंजु जैन श्री अनिल जैन, मयूर विहार दिल्ली

सांत्वना १. सौ. मीना सुहास द्रोणगांवकर, देवलगाँव राजा (महाराष्ट)

२. पुष्पा जैन महेन्द्र जैन, देवली टोंक (राज.)

३. शकुन्तला श्री रमेशचंद जैन, मालपुरा टोंक

४. पायल जैन श्री राकेश जैन, छिंदवाड़ा

५. श्रीमती शर्मिला मिलन कुमार जैन, दोर्नकल (तेलंगाना)

Scanned with CamScanner

प्रतियोगिता -१३

प्रथम - ममता जैन श्री अरूण जैन, कैलाशनगर दिल्ली
द्वितीय - तानियाजैन श्री संजीवजैन, कैलाशनगर दिल्ली
तृतीत - राजारानी जैन श्री सुभाष जैन कैलाश दिल्ली
सांत्वना १. रचना जैन श्री अनुज जैन, कैलाशनगर दिल्ली
२. सुनीता जैन श्री रमेशचंद जैन कैलाशनगर दिल्ली
३. मधु जैन श्री अनिल जैन, कैलाशनगर दिल्ली
४. आंचल जैन श्री नितन जैन, कैलाशनगर दिल्ली
५. गरिमा जैन श्री कपित जैन कैलाशनगर दिल्ली

प्रतियोगिता -१४

प्रथम - अनिल जैन शिखरचंद जैन चन्द्रनगर गाजिया.
द्वितीय - महक जैन राकेश जैन, कैलाशनगर दिल्ली
तृतीत - साकेत जैन, सान्तकुमार जैन महावीरपुरा ललितपुर
सांत्वना १. शरणया जैन अनुज जैन, चंडीगढ़
२. श्रीमती विनोद धर्मपाल जैन, बड़ौत उ.प्र.
३. संयम जैन संजय कु. जैन, टीकमगढ म.प्र.
४. कुसुमवेन सुभाषचंद जैन, शनवारा, बुरहानपुर
५. दीपिका विपुल तैवरैया, टीकमगढ़ (म.प्र.)

प्रतियोगिता -१५

प्रथम - श्रीमती सुनीता श्री सुभाष जैन, बड़ौत
द्वितीय - श्रीमती संगीता श्री नीरज जैन, यमुनाविहार दिल्ली
तृतीत - श्री शौर्या जैन नितेश जैन, राजा प्रताप बाग दिल्ली
सांत्वना १. अंजना जैन श्री अजय जैन, सिल्वर गार्डन, गाजियाबाद
२. सुमन जैन शिखरचंद जैन, पत्रकार विहार इन्द्रापुरम गाजियाबाद
३. श्रीमती उषा श्री राकेश जैन, गगन विहार दिल्ली
४. अतुल जैन श्री तरशचंद जैन, शंकरनगर दिल्ली
५. सरोज जैन श्री विमल जैन, दरियागांव दिल्ली

प्रतियोगिता -१६

प्रथम - कु. अनुश्री श्री हेमचन्द्र जैन, टीकमढ़ म.प्र.
द्वितीय - श्रीमती पराग श्री संजय जैन बुरहानपुर
तृतीत - श्री महक जैन श्री अनुज जैन, शंकरनगर दिल्ली
सांत्वना १. श्रीमती सुनीता श्री राजेन्द्र कुमार जैन, कृष्णानगर दिल्ली
२. श्रीमती शशी जैन श्री सुधीर कुमार जैन, आजाद नगर, दिल्ली
३. श्रीमती तुषार काला श्री मनीष कुमार काला
४. डॉ. प्रभा जैन स्व.डॉ. सुरेश कुमार, टीकमगढ़
५. कु. आर्या अतुल जैन, शिवनगर, जबलपुर

प्रतियोगिता -१७

प्रथम - श्रीमती प्रज्ञा विपुल शाह, गांधीनगर गुज.
द्वितीय - आकृति सिंघई पवन सिंघई, टीकमगढ़ म.प्र.
तृतीत - जागृति के शाह कमलेश पी शाह गांधीनगर गुजरात
सांत्वना १. श्रीमती ममता श्री सुधीर जैन, जामा मस्जिद दिल्ली
२. श्री ऋषि रिषभ जैन, चौधरी टीकमगढ़
३. श्रीमती पुष्पा रजनीश चंद जैन, पन्ना म.प्र.
४. श्री तापसी जैन पुनीत जैन, पटेलनगर, गाजियाबाद
५. बा.ब्र.डॉ. शैली श्री आनन्द जैन, बड़ा मल्हरा

प्रतियोगिता -१८

प्रथम - भावना जैन श्री नितिन जैन, राजगढ़ दिल्ली
द्वितीय - श्रीमती नोनीबाई उत्तमचन्द्र जैन, लार टीकमगढ़
तृतीत - श्रीमती क्रांति स्व. नरेन्द्र जैन, कोलार रोड, भोपाल
सांत्वना १. अंकिता बेन श्री शीतल कु. शाह ईडर (गुज.)
२. विद्या देवी श्री वीरेन्द्र कु. जैन, भोपाल
३. निधी जैन श्री कमल जैन, अजयगढ़ पन्ना
४. श्रीमती मनीषा श्री धीरज कु. जैन, पन्ना
५. श्रीमती निर्मल स्व. श्यामलाल जैन, शाहदरा दिल्ली

प्रतियोगिता -१९

प्रथम - श्री मनोज बजाज श्री फूलचन्द्र जी बजाज टीकमगढ़ (म.प्र.)
द्वितीय - श्रीमती अमरावती श्री आन्नदी लालजी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
तृतीत - श्री सुधा श्री नलीन कुमार एन शाह, गांधीनगर गुजरात
सांत्वना १. रीटा एन श्री नितिन डी शाह गांधीनगर (गुज.)

Scanned with CamScanner

२. अभिषेक जैन स्व. राकेश जैन, पन्ना
३. निरूबेन श्री मुकेश एन शाह, अहमदाबाद
४. शिप्रा जैन श्री हरिश जैन, शांतिनगर, दुर्गापुर जयपुर
५. सजल जैन श्री मनोज जैन, पथरिया दमोह

प्रतियोगिता -२०

प्रथम - अविनाश जैन जमना प्रसाद जैन, शंकराचार्य नगर भोपाल
द्वितीय - अंकिता जैन अर्जुन सिंघई, टीकमगढ़
तृतीत - शैल जैन स्व. हंस कुमार जैन, वैशाली गाजि.
सांत्वना १. कु. सेजल श्री दिनेश जैन अल्ली टीकमगढ़
२. श्री अंजली श्री पंकज जैन, टीकमकढ़
३. श्री पद्मा जैन श्री ईश्वर दास जैन, रोहिणी दिल्ली
४. श्री मधु जैन श्री अभय कुमार जैन, इन्द्रिापुरम गाजियाबाद
५. श्री सरोजजैन सनत कुमार जैन, मड़ावरा ललितपुर

प्रतियोगिता -२१

प्रथम - श्रीमती शांतिदेवी श्री गुलाबचंद, टीकमगढ़
द्वितीय - श्रीमती कमला श्री सतेन्द्र जैन, कैलाशनगर, दिल्ली
तृतीत - पियूष मलैया श्री पद्म मलैया, पथरिया
सांत्वना १. श्रीमती रिचा श्री अनेकान्त जैन, कांकेर छ.ग.
२. अंजनी कांता पं. ऋषभ शास्त्री, राजिम छ.ग.
३. डॉ. चन्द्रप्रभा श्री आलोक जैन, छत्तरपुर म.प्र.
४. अनिता जैन अनिल जैन, मेरठ उ.प्र.
५. श्रीमती श्वेता श्री सौरभ सराफ, भोपाल

प्रतियोगिता -२२

प्रथम - श्री विनोद कु. लक्ष्मीचंद जैन, दमोह म.प्र.
द्वितीय - श्री नीशू जैन पुत्री पवन कुमार जैन, महरौनी
तृतीत - श्रीमती उषारानी सुरेश जैन, उस्मानपुरा दिल्ली
सांत्वना १. श्रीमती निर्मला विमलचन्द्र जी, भीण्डर राज.
२. श्रीमती प्रतीक्षा अंशुल सराफ, टीकमगढ़
३. आराध्य अजय कु. जैन छतरपुर
४. रेखा जैन वाणावत नरेन्द्र जैन, भीण्डर राज.
५. गुणमाला जैन, सुरेशचंद जैन, पाण्डवनगर दिल्ली

प्रतियोगिता -२३

प्रथम - श्रीमती पिंकी श्री प्रदीप जैन, बजरिया गाजि.
द्वितीय - कृष्णा, जगदीश प्रसाद जैन, आजाद नगर, दिल्ली
तृतीत - श्रीमान कमल जैन, दिनेश जैन, रामनगर गाजियाबाद
सांत्वना १. श्रीमान प्रदीप जी सुखवीर प्रसाद जैन, बजरिया, गाजियाबाद
२. श्रीमती सविता जैन, संजय नगर, गाजियाबाद
३. श्रीमती मनोरमा श्री निर्मलचन्द्र जैन, बड़वाह खरगोन
४. श्री विनिता श्री मुकेश जैन धर्मपुरा दिल्ली
५. श्री सुमन श्री अनिल जैन, वल्लपुरी दिल्ली

प्रतियोगिता -२४

प्रथम - श्रीमती विमला ज्ञानचन्द्र जी ककरवा वाले शाहगढ़ (म.प्र.)
द्वितीय - श्रीमती शारदा स्व. सुशील जी जैन, वैशाली गाजियाबाद
तृतीत - श्रीमती ज्योति श्री निर्मल पाटनी, नेमिनगर, इंदौर
सांत्वना १. श्रीमती मीना प्रमोद जी जैन, टीकमगढ़
२. श्रीमती सुषमा सुशील जैन, शंकरनगर दिल्ली
३. श्रीमती सरोज विमल जैन, दरियागंज दिल्ली
४. श्रीमती मेघा वीरेन्द्र जैन, अजयगढ़ पन्ना
५. श्रीमती शकुन्तला विजय जैन, बुरहानपुर

प्रतियोगिता -२५

प्रथम - श्री मदनलाल स्व. बलवीर सिंह जैन, शाहदरा
द्वितीय - श्रीमती मंजू स्व. राकेश जी जैन, बेगमबाग मेरठ
तृतीत - श्रीमती प्रभा स्व. आनन्द जी जैन, शाहदरा दिल्ली
सांत्वना १. श्रीमती राजेश जैन सुमेरचंद जैन ,शाहदरा दिल्ली
२. श्री जैनवती श्रीएस.पी. जैन, पांडवनगर दिल्ली
३. श्री विनीता श्री चक्रेश जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना
४. श्री प्रदीप कुमार पिता स्व. कान्तिलाल शाह, शान्तिनगर भिलाई
५. श्री मेघा जैन श्री संदेश जैन, रायपुर (छ.ग.)

Scanned with CamScanner

विराग सेतु

अठारह -विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गो में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

पाहुत्त-घोस-जय सम्मदि-आइरीयो
सव्वाण साहुजय-सम्मदि-साहगाणं।
पुण्णो पफुल्ल-अरबिंद-णिसल्ल-धत्तो
तेसिं णमेदि तय-अंजलि-सीस-जुत्तो।। ४२।।

उसी समय तीव्र जय ध्वनि गूँज उठती है। आचार्य सन्मतिसागर की जय हो, सन्मति युक्त सभी साधक साधुओं की जय हो। यहाँ पूर्ण प्रफुल्लित अरविन्द निशल्य युक्त त्रि अंजलिबद्ध उन सभी के लिए नमन करता है।

सव्वे हि मंडव-जण अधुणा हि संतिं
धारेविदूण पुण पस्स-सुपस्स -चिंते।
किं एस सेय-वय-खुल्लग-मग्ग-जोग्गो
तं पच्छ साहु-समिदिं सुगमो वि णत्थि।। ४३।।

इस समय सभी मण्डप में स्थित शान्ति धारणकर बारम्बार देख देख ही सोचते कि क्या यह अवस्था क्षुल्लक मार्ग के लिए योग्य है, श्रेयस्कर है? क्षुल्लक के पश्चात् साधुओं की समिति को पालन करना सुगम नहीं हैं।

संसारि-रागि-मणुजा रदि-राग-जुत्ता
हुंति त्ति ते णवर किं अणुचिंतएंति।
जाणेंति दुक्ख-परिपुण्ण-असार-लोयं
सुत्तेग-पाढ-पढणे वि मुणेंति तं च।। ४४।।

संसारी रागी मनुष्य तो रति, राग युक्त होते हैं इसलिए वे इसके अतिरिक्त और क्या सोच सकते हैं? वे इस दुःखों से परिपूर्ण असार लोक को जानते हैं तथा उस रहस्य को प्रत्येक सूत्र के पाठ पढ़ने पर भी चिन्तन करते हैं।

मंतेहि संग अदि-मंगल-गीद-गुंजे
केसाण कुंतल-कलाण इथेव लुंचे।
जो एग-केस-कर-लुंच-दुहं कुणेदि
तं अज्ज सोम्म-ससिणो कर लुंचएदि।। ४५।।

इधर मन्त्रों के मंगल पाठ, मंगल गीत गूँज उठते हैं। केशों के कला का लुंच होने लगता है। जो एक केश को हाथ से उखाड़ने पर दुःख करता था, वही सौम्य शशि अरविन्द अपने हाथों से ही लुंचित कर रहा है।

भव्वो तुमं तुम जयी वि परीसही वि
साहस्स-णारि-णर मज्झ पुरे हि लोंचं।

Scanned with CamScanner

कुव्वेविदूण मणुजाण सुबोहए तुं
साहूण एगचरियाइ इमो वि अत्थि।। ४६।।

इधर लोंच होते ही जयकार के साथ कह उठा-भव्य हो आप, आप जयी हो, आप परीषहजयी हो। हजारों नर-नारियों के बीच, उनके समक्ष लोंच करके लोगों को सम्बोधित कर दिया कि साधुओं की चर्या में केश लोंच भी एक चर्या है।

सव्वं विहिं च समए चदु-काल-पुण्णो।
जाएज्ज सम्म-वयणाण सुदेसणाए।
आसीस-सीस-णव-दिक्खिद-खुल्लगं च
पादारबिंद-णम-पुण्ण-मुणि व्व तुम्हे।। ४७।।

बुढ़ार ग्राम में सम्पूर्ण विधि समय ४ बजे ही पूर्ण हुई। उस समय उत्तम वचनों की देसना से लोग प्रभावित हुए। पादारबिन्द में नत पूर्ण मुनि की तरह इस पूर्णसागर क्षुल्लक को नव दीक्षित शिष्य के रूप में आशीष प्राप्त हुआ।

आणाणुसार-रदणो बिदु धम्म-मादा
मण्णे जणा समय-सासण-संस-णेज्जा।
पुब्बे हवेदि रिसहस्स मुणिस्स लोंचो
पाडिक्कमं विणय-वंदण भत्ति-भावो।। ४८।।

आज्ञानुसार सिं. रतनचन्द एवं उनकी धर्मपत्नी अरविन्द के माता पिता (धर्म के माता-पिता) बनते हैं। मान्यजन/प्रतिष्ठित लोग इस समय शासन की प्रशंसा करते हैं। इसी समय मुनि ऋषभसागर के केश लोंच होते हैं, प्रतिक्रमण, नियम वन्दन, भक्ति भाव आदि सभी होता है।

एस पुण्ण सागरो सुखुल्लगो, एस पुण्णसागरो सुसिस्सगो।
सम्मदीइ संमदिं सुणायगं णम्मदे पमाद-मुत्त-सूरिणो।। ४९।।

ये पूर्णसागर क्षुल्लक पूर्ण तो पूर्ण क्षुद्र रूप अगार से इस मार्ग की ओर अग्रसर हुए हैं। ये क्षुल्लक पूर्णसागर अब तो आचार्य सन्मतिसागर के उत्तम शिष्य बन गए। ये सन्मति से सन्मति के नायक प्रमाद मुक्त सूरी के चरणों में सन्मति के लिए नमन करते हैं।

सम्मं तवं सम्म-समित्त-सेविदुं संदंसणं णाण-चरित्त-लेहिदुं।
वासं कुणंतं धर-झाण-भावणं णेदूण गच्छे मुणि-तुल्ल-पावणं।। ५०।।

क्षुल्लक पूर्णसागर सम्यक् तप की ओर अग्रसर सम्यक् समिति का पालन एवं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का लेखन/आत्मसात् करने के लिए उपवास आदि करते हुए, ध्यान भावना को भाते हैं तथा वे मुनि सदृश पावन विचारों को लेकर चलते हैं।

झाणं णाणं सयलं वत्थु-तच्चं, सत्थंसारं समयं कव्व-रम्मं।
जाणेदुं सुत्त-रसं आद-सच्चं, गंभीरं धीरधरं णाय-णीदिं।। ५१।।

क्षुल्लक पूर्णसागर ध्यान, सम्पूर्ण वस्तु तत्त्व ज्ञान, शास्त्रसार, समय/सिद्धान्त सार, काव्य की रमणीयता, सूत्रसार, आत्मसत्य आदि की गम्भीरता, धीरता, न्याय नीति आदि की विशेषता को जानने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

मुणिणाध-संमदि-गुरुं चरणे सुद-सार-संमद-पदं धरणे।
अरबिंद फुल्लवद-खुल्लगदे, इध पुण्ण-सागर-सुपुण्ण-धरे।। ५२।।

अरविन्द जो खिला तो पूर्ण खिल ही गया, वे पूर्णसागर रूपी पुण्य को धारण करते रहे। उन्होंने आचार्य सन्मतिसागर रूपी गुरु चरणों में ध्यान लगाकर ही मानो श्रुतसार सम्मत पद को धारण करने में मन लगा लिया हो ऐसा प्रतीत हो रहा था।

इति एगारह-विरागो सम्मत्तो

क्रमश......

Scanned with CamScanner

फाल्गुन माह के व्रत कल्याणक महोत्सव

१ फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण १	सोलहकारण व्रत पूर्ण
३ फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण ३	पद्म प्रभु मोक्ष कल्याणक
८ फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
१० फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण १०	श्रेयांसनाथ जन्म, तप कल्याणक
१० फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण १०	श्री आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
१२ फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण १२	श्री मुनि सुव्रतनाथ मोक्षकल्याणक
१४ फरवरी २०१८	फाल्गुन कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत, श्री वासुपूज्य जी जन्म तप कल्याणक।
१८ फरवरी २०१८	फाल्गुन शुक्ल ३	श्री अरहनाथ गर्भ कल्याणक
२० फरवरी २०१८	फाल्गुन शुक्ल ५	श्री मल्लिनाथ जी मोक्षकल्याणक
२२ फरवरी २०१८	फाल्गुन शुक्ल ७	श्री चन्द्रप्रभु जी मोक्ष, अष्टान्हिका पूर्व प्रारम्भ
२३ फरवरी २०१८	फाल्गुन शुक्ल ८	अष्टमी व्रत, श्री संभवनाथ गर्भ कल्याणक
२४ फरवरी २०१८	फाल्गुन शुक्ल ९	रोहिणी व्रत
१ मार्च २०१८	फाल्गुन शुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत, अष्टान्हिका पर्व पूर्ण।

फरवरी माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
दीक्षा दिवस	१.२.२०००	भिण्ड, श्रमण श्री विश्वशान्ति सागर जी, श्रमण श्री विश्वधर्म सागर जी, आर्यिका विनतश्री माता जी, आर्यिका विपश्यना श्री माताजी।
जन्म दिवस	१.२.१९५४	परतापुर (राज.), श्रमण श्री विश्वभद्र सागर जी
जन्म दिवस	३.२.१९३९	ललितपुर, (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्व विज्ञसागर जी मुनिराज
दीक्षा एवं समाधि	३.२.२०१६	पाली (उ.प्र.), श्रमण श्री विश्व जिनसागर जी
पुण्यतिथि	४.२.२००४	नवापारा (छ.ग.), श्रमणी आ. विमानश्री माताजी
जन्म दिवस	६.२.१९९९	देवेन्द्र नगर (म.प्र.), श्रमण श्री विनिवेषसागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	७.२.२०१४	कारीटोरन (उ.प्र.), क्षुल्लिका विनिग्रहश्री माता जी
दीक्षा दिवस	७.२.२०१६	श्रमण श्री विश्वसिद्धि सागर जी
दीक्षा दिवस	८.२.१९९६	द्रोणगिरि (म.प्र.) श्रमण श्री विश्वजीत सागर जी, श्रमण श्री विशद सागर जी, श्रमण श्री विश्वकीर्ति सागर जी।
दीक्षा दिवस	८.२.२००६	टोंक (राजस्थान), मुनिश्री विबुद्धसागर जी
समाधि दिवस	९.२.२०१६	पाली (उ.प्र.), श्रमण श्री विश्वसिद्धि सागर जी
दीक्षा दिवस	१३.२.२००६	श्रवण बेलगोला (कर्ना.) श्रमणश्री विश्वस्त सागर, श्रमण श्री

Scanned with CamScanner

विवर्धन सागर जी, श्रमणी श्री विशेष सागर जी, श्रमण श्री विश्रुतसागर जी, श्रमणी आ. विवक्षाश्री माता जी, श्रमणी आ. विदक्षा श्री माताजी, श्रमणी आ. विरम्या श्री माता जी, श्रमणी आ. विकाम्या श्री माता जी, श्रमणी आ. विकंपाश्री माता जी, श्रमणी आ. विप्राश्री माता जी, श्रमणी आ. विप्रभाश्री माताजी, ऐलक श्री विश्वविभूसागर जी, ऐलक श्री विदाम्बर सागर जी, ऐलक श्री विभास्वर सागर जी, क्षु. श्री विभंजन सागर जी, क्षु. श्री विरंजन सागर जी, क्षु. श्री विश्वामित्र सागर जी, क्षु. श्री विश्वप्रियसागर जी, क्षु. श्री मनोज्ञसागर जी, क्षु. प्रशम सागर जी, क्षु. श्री अपर्णसागर जी।

दीक्षा दिवस	१३.२.२००५	श्रमण श्री विशालसागर जी, क्षु. श्री विबुद्धसागर जी
दीक्षा दिवस	१७.२.२००८	गिरार, क्षु. श्री अध्यात्मसागर जी
जन्म दिवस	१८.२.१९७१	रुर भिण्ड (म.प्र.), श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	२०.२.१९८०	बुढार (शहडोल) क्षु. श्री पूर्णसागर जी (वर्तमान प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज)
जन्म दिवस	२०.२.१९७८	भिण्ड (म.प्र.) श्रमण श्री विजयेशसागर जी क्षुल्लिका विस्मिता श्री माता जी।
दीक्षा समाधि दिवस	२१.२.२०१६	भूवनजी (म.प्र.) श्रमण श्री विश्वपद्म सागर जी
जन्म दिवस	२२.२.१९९३	सागर, (म.प्र.) श्रमणी आ विविक्त श्री माता जी
पुण्य तिथि	२३.२.२०११	भिण्डर (राजस्थान) श्रमण श्री विश्वज्योति सागर जी।
दीक्षा दिवस	२३.२.१९९६	देवेन्द्र नगर (म.प्र.) ऐलक श्री विभवसागर जी, ऐलक श्री विमर्श सागर जी, ऐलक श्री विहर्षसागर जी, ऐलक श्री विनिश्चय सागर जी, क्षु. श्री विनिश्चल सागर जी, क्षु. श्री विभद्रसागर जी।
दीक्षा दिवस	२३.२.२००८	द्रोणगिरि (म.प्र.) क्षु. अकलंक सागर जी
दीक्षा दिवस	२५.२.२००२	सिलवानी (म.प्र.), क्षु. विश्रुतसागर जी, क्षु. श्री विश्वेश सागर जी
जन्म दिवस	२५.२.१९८६	ऋषभदेव, श्रमणी आ. विपुल श्री माता जी
दीक्षा दिवस	२६.२१९९५	आहार जी (म.प्र.), श्रमणी आ. विशाश्री माताजी, श्रमणी आ. विभाश्री माताजी, श्रमणी आ. विध्यश्री माता जी, श्रमणी आ. विज्ञाश्री माताजी।
दीक्षा दिवस	२६.२.१९५२	सोनागिर जी, प.पू. आ. विमलसागर जी महामुनिराज
जन्म दिवस	२६.२.१९२९	गुदेश (म.प्र.), मुनिश्री विश्वपद सागर जी
दीक्षा दिवस	२७.२.२०१२	सोनागिर जी श्रमण श्री विशांत सागर जी, श्रमण श्री विभंजन सागर जी, श्रमण श्री विहसंतसागर जी, श्रमण श्री विजयेश सागर जी।

Scanned with CamScanner

समाचार

श्रमण श्री विश्वादर्श सागर जी मुनिराज का समाधि पूर्वक मरण

जीवन की क्षण भंगुरता को संसारी मोही प्राणी समझ नहीं पाता है। कुछ ही ऐसे भव्य प्राणी होते है जो इसे समझ कर दुर्लभता से प्राप्त इस मनुष्य पर्याय को सार्थक कर लेते हैं। उन्हीं भव्य जीवों में से थे। श्रमण मुनि श्री विश्वादर्श सागर जी मुनिराज सहारनपुर (म.प्र.) निवासी जिनका पूर्व नाम था श्री सुमति प्रसाद जैन, जन्म १३ मई १९३५ को श्री रहतुमल जी-श्रीमती मनभरी देवी के यहाँ हुआ था। कक्षा १० तक शिक्षा प्राप्त की। आपके ५ भाई व ३ बहिन थी आपका विवाह श्रीमती कान्ता जैन के साथ हुआ था। जिनसे आपके २ पुत्र व २ पुत्रियाँ थी। धर्म निष्ठ परिवार में जन्म होने के कारण आप में धार्मिक संस्कार थे तथा पं. रतनचन्द्र जी मुखतार से भी आपको धार्मिक ज्ञानार्जन का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रातः ४ बजे से ही मंदिर पहुचकर अपनी धार्मिक क्रिया में समे रहते थे। सहारनपुर में आपकी पहचान प्रमुख समाज सेवी एवं धार्मिक व्यक्ति के रूप में थी। सुकृत से कमाये अपने द्रव्य को जिनालय के निर्माण एवं मूर्तियों की स्थापना में लगाया। अनेक समाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े होने से आपके दीक्षा लेने के निर्णय पर सहारनपुर में आपकी ऐतिहासिक भव्य विनौली निकाली गई। अनेकों संस्थाओं द्वारा आपका सम्मान कर गोद भराई की गई। दिनांक २ नवम्बर २०१७ को दिल्ली लाल किला मैदान में दी गई। २६ जैनेश्वरी दीक्षाओं में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा आपको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान कर क्षुल्लक विश्वादर्श सागर के नाम से संस्कार किये गये। दीक्षा उपरान्त आप उत्तम चर्या का पालन करते हुए अपनी साधना में रत रहते थे। ८३ वर्ष की आयु में भी आप अपनी सभी क्रियाएँ फुर्ती के साथ करते थे। प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ ७१ पिच्छी का हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र के लिये विहार चल रहा था। दिनांक ६ जनवरी को प्रातः उन्होंने प.पू. गुरुदेव से स्वास्थ ठीक न होने की बात कहीं। पूज्य गुरुदेव ने संघस्थ साधिकों को उनका ध्यान रखने व आहार में उनको औषधि चलाने की व्यवस्था की। मवाना जि-मेरठ में उनका स्वास्थ्य अचानक ज्यादा खराब हुआ। उन्हें पूज्य गुरुदेव के पास लाया गया। पूज्य गुरुदेव ने उनका अन्तिम समय जानकर उन्हें मुनिदीक्षा प्रदान की तथा यम सल्लेखना के साथ चारों प्रकार के आहार का त्याग कराकर संबोधन दिया। पूज्य गुरुदेव के मुख से संबोधन सुनते सुनते दिनांक ६ जनवरी २०१८ को दोपहर १.२० बजे आपने गुरुचरणों में भगवान श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर में अन्तिम श्वास से सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण कर अपनी इस मानव पर्याय को धन्य कर लिया। श्री दिगम्बर जैन समाज मवाना ने आपकी अन्तिम यात्रा महोत्सव पूर्वक निकालकर हस्तिनापुर के जैन तपस्वी आश्रम में आपका अन्तिम संस्कार किया।

सागर जैन, कैलाशनगर, दिल्ली

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के शिष्य समाधिस्थ श्रमण श्री विश्वादर्श सागर जी मुनिराज का जीवन - परिचय

पूर्व नाम	-	श्री सुमति प्रसाद जी जैन
निवास	-	सहारनपुर (उ.प्र.)
जन्म	-	१३.५.१९३५
शिक्षा	-	कक्षा १० वीं
पिता-माता	-	स्व. श्री रहतुमल जी स्व् श्रीमती मनभरी देवी जैन
परिवार	-	धर्म पत्नी-स्व. श्रीमती कान्ता जैन, भाई-५, बहिन ३, पुत्र-२, पुत्री २

Scanned with CamScanner

क्षुल्लक दीक्षा-		२ नवम्बर २०१७, लाल किला दिल्ली।
नाम -		क्षुल्लक श्री विश्वादर्श सागर जी
दीक्षा गुरु	-	प.पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
मुनिदीक्षा -	-	६ जनवरी २०१८,मवाना जिला- मेरठ
सल्लेखना समाधि	-	६ जनवरी २०१८ दोप. १.२० बजे मवाना
निर्यापकाचार्य	-	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
अन्तिम संस्कार	-	जैन संततपो स्थली हस्तिनापुर (उ.प्र.)

श्रमण मुनि विश्वादर्श सागर जी महाराज का समाधि मरण महोत्सव

गुरु चरणों में समाधिमरण करने वाले मरकर भी अमर होते हैं।

परम पूज्य विश्वहितैषी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज का शीतकालीन मंगल विहार बड़ेगांव से हस्तिनापुर की ओर चल रहा था। ता. ६ जनवरी २०१८ शनिवार को मवाना में भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

मवाना में प्रथम बार इतने बड़े संघ के सान्निध्य में बच्चे-बच्चे में खुशी की लहर थी। आचार्य संघ के दर्शन कर सभी अपने आप को सौभाग्य एवं पूर्व में किये पुण्य की सराहना कर रहे थे। तभी अनायाश उसमें एक और महोत्सव जुड गया। वह यह कि संघस्थ वयोवृद्ध क्षुल्लक श्री विश्वादर्श सागर जी महाराज का स्वास्थ्य कई दिनों से खराब चल रहा था। प्रात: पूज्य गुरुवर ने प्रमोद भाव में उनसे कहा- क्षुल्लक जी बहुत दुबले हो अच्छे से आहार लिया करो थोड़े मोटे हो जाओ। क्षुल्लक जी ने कहा- गुरुदेव आज केंशलोंच करना है उपवास करना चाहता हूँ। किन्तु ठण्डी अधिक होने से गुरुवर ने उन्हें उपवास करने से मना किया किन्तु उनकी क्षीण स्थिति को देख सावधान भी थे।

संसार में जन्म लेने वाले को एक दिन जाना ही पड़ता है यह अमिट सत्य है किन्तु जीवन को सफल बनाने वाली संयम साधना कर गुरु चरणों में समाधि मरण करने वाला मरकर भी अमर हो जाता है।

क्षुल्लक विश्वादर्श सागर जी ऐसे ही भव्य जीव थे। सहारनपुर के निवासी आप अत्यंत भद्र परिणामी एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के धनी थे। आप पण्डित के नाम से व्याख्यात विद्वानों के सिरमौर्य थे। दो नवम्बर दिल्ली की हृदय स्थली लाल किले पर क्षुल्लक दीक्षा ले। आपने अपना संपूर्ण जीवन गुरु चरणों में सौप दिया। मुनि बनने की आपकी हर्दिक भावना थी। अत: अंत समय में मुनि बनाने की प्रार्थना भी आपने गुरुवर से की थी।

दोपहर आहार के पश्चात् आपका स्वास्थ्य बिगड़ा और उल्टी हो गई। अत: शीघ्र ही संघस्थ महाराजों द्वारा आपको गुरुवर के पास लाया गया। पारखी गुरुवर ने आपकी स्थिति को समझते हुए तत्क्षण मुनिदीक्षा प्रदान की और यम सल्लेखना पूर्वक चारों प्रकार के आहार का त्याग कराया कुछ ही क्षणों में पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से मंत्रोच्चारण सुनते हुए। आपने अपनी अंतिम श्वास छोड़ दी।

आपकी अंतेप्टी हस्तिनापुर के करीब तपोवन में गई। ८.१.२०१८ को परिवारिक लोगों द्वारा शांति विधान एवं अस्थि विसर्जन क्रिया संपन्न की गई।

धन्य है ऐसे साधक जिन्होंने संयम धारण कर ज्ञान की सार्थकता प्रदर्शित की एवं धन्य हैं पूज्य गणाचार्य भगवन् जो वृद्ध को शरण प्रदान कर दीक्षा पूर्वक उनकी सफल सल्लेखना समाधि कराते हैं। पूज्य गुरुवर के कुशल निर्यापकत्व में यह ९६ वीं सफल सल्लेखना समाधि सम्पन्न हुई।

Scanned with CamScanner

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के शिष्य समाधिस्थ आर्यिका विदर्भश्री माता का जीवन - परिचय

पूर्व नाम	-	श्रीमती हीराबाई जैन
निवास	-	भिण्ड (म.प्र.)
जन्म/आयु	-	१९४७, वर्ष ७०
जाति	-	जैन गोल श्रंगार
पिता-माता	-	स्व. श्री अमोलक चंद जी स्व. श्रीमती सोना बाई जैन
पति	-	स्व.श्री रूपचंद जी जैन
परिवार	-	पुत्र-१, पुत्री-३
ब्रह्मचर्य व्रत	-	१९८८
क्षुल्लिका दीक्षा	-	२ नवम्बर २०१७ लाल किला मैदान दिल्ली
आर्यिका दीक्षा	-	१४ जनवरी २०१८, कविनगर, गाजियाबाद
नाम	-	आर्यिका विदर्भश्री माता जी
दीक्षा गुरु	-	प.पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
सल्लेखना समाधि	-	१४ जनवरी २०१८ रात्रि कविनगर, गाजियाबाद
निर्यापकाचार्य	-	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
अन्तिम संस्कार	-	हिन्डन घाट गाजियाबाद (उ.प्र.)

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान-

१. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली
फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

Scanned with CamScanner

विराग वर्ग पहेली 26

उदाहरण - र[वि राग] नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे-विराग

(1) रति रे पनघट के ऊपर ना जा।

(भाव कितने होते है?)

(2) छोटे बच्चों ने पाठशाला में पूछा काका पोत जन्म किसका होता है।

(द्वितीय नरक में लेश्या)

(3) दाऊ नहाना नहीं है ?

(पावागिर का दूसरा नाम)

(4) अभिषेक भईया ने कहा पप्पी ठडूला बनाना आता है ?

(शरीर का एक अंग)

(5) मौका लाजवाब मिला है।

(भगवान मुनिसुव्रतनाथ का रंग)

(6) मैंने मरूति गुना से खरीदी है।

(पानी का छन्ना बर्तन के मुख से होना चाहिए)

(7) व्रतों को हमें हमेसा धारण करना चाहिए।

(वनस्पति का एक भेद)

(8) आज रवि परी तनीश मेला घुमनें जाएँगे।

(एक मिथ्यात्व)

(9) चक्की लकड़ी की नहीं लोहे की होती है।

(एक सहनन)

(10) पांच पाण्डव में नकुल व सहदेव सर्वार्थसिद्धि गये।

(एक मद)

विराग वर्ग पहेली 25 के उत्तर

(1) आठ

(2) पचास

(3) चेलना

(4) काल

(5) सुभग

(6) जरासिंध

(7) सत्रह

(8) जाति

(9) नाग

(10) हरा

नोट- (1) कोष्टक में दिये गये प्रश्न का उत्तर वाक्य के बीच में ढूंढो।

(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ रेखा खीचे या डब्बा बनाये व सामने लिखें भी।

(3) उदा. के अनुसार ही प्रतियोगिता हल करें।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .... मो. ....

पिता/पति का नाम ....

पता ....

Scanned with CamScanner

1–2. मोदी नगर मे अगवानी पर मुनि शिव सागर जी 3. बडौत में नगर प्रवेश पर 108 थालों में पू. गणाचार्य का पादप्रक्षालन करते श्रावकगण 4–5–6. बडौत अगवानी पर उमड़ा जन सैलाब 7–8. खेकड़ा मे श्रेयांस जैन गणाचार्य श्री के चरणों में सिर रखकर माफी मांगते हुए 9. मवाना में नगर प्रवेश पर उमड़ा जन सैलाब

10. मवाना में मुनि विश्वादर्श सागर जी को अन्तिम सम्बोधन देते हुए पू. गणाचार्य 11. मुनि विश्वादर्श सागर जी की अन्तिम यात्रा में जन सैलाब 12. जैन तपोवन हस्तिनापुर में मुनि विश्वादर्श सागर के अन्तिम संस्कार का दृश्य 13. कविनगर में क्षुल्लिका विदर्भ श्री माता जी को आर्यिका दीक्षा एवं अन्तिम सम्बोधन करते 14. आर्यिका विदर्भ श्री माता जी की संलेखना समाधि में आर्यिका संघ 15. आर्यिका विदर्भ श्री माता जी की अन्तिम यात्रा

Scanned with CamScanner

1.बड़ागांव त्रिलोक तीर्थ 2.बड़ा मन्दिर बड़ागांव 3,6. ज्ञान स्थली क्षेत्र, परतापुर 4,5.ऋषभांचल तीर्थ में मां कौशल संघ की अगवानी करते हुए 7. त्यागी व्रती आश्रम बड़ागाव में मुनि वारिषेण अगवानी करते हुए 8,9.बड़ागांव में श्रमण श्री त्रिलोकभूषण मुनि श्री श्रमणी चन्द्रमती माता जी श्रमणी दृष्टि भूषण माता जी अगवानी करते हुए 10,11,12,13. बड़ौल में नगर प्रवेश का दृश्य 14. सरधना प्रवेश पर NSS के छात्र गण अगवानी में

स्वामी विरागविद्या पीठ भिण्ड की ओर से प्रकाशक एवं मुद्रक- अनूप कुमार जैन ने साईनाथ ऑफसेट प्रिंटर्स, हॉल नं. १ चित्तौड़ काम्प्लेक्स, जोन-१ एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित कराकर जी -२४१, गौतम नगर, भोपाल से प्रकाशित किया। संपादक इंजी. आनन्द कुमार जैन

Scanned with CamScanner